RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15

अंक : 185

दि. 06.11.2025,

गुरुवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

राहुल का बड़ा आरोप: हरियाणा में हर आठवां मतदाता फर्जी, 25 लाख से अधिक वोटर तैयार

(जीएनएस)। नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को इंदिरा भवन में आयोजित एक विशेष प्रेस वार्ता में हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर गंभीर आरोप लगाए। 'एच फाइल्स' के नाम से आयोजित इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में राहुल गांधी ने दावा किया कि हरियाणा में लगभग 25 लाख फर्जी वोटर तैयार किए गए, जिनके जरिए चुनाव परिणामों को "संगठित तरीके से प्रभावित" किया गया। उन्होंने कहा कि यह केवल हरियाणा तक सीमित नहीं है और बिहार में होने वाले पहले चरण के मतदान में भी इसी तरह की गड़बड़ी की योजना बनाई जा रही है।

राहुल गांधी ने प्रेस कांफ्रेंस में आंकड़े पेश करते हुए बताया कि हरियाणा में लगभग दो करोड़ मतदाताओं में से 25,41,144 वोट फर्जी पाए गए। इसमें 5,21,619 डुप्लीकेट वोटर, 93,174 अमान्य पते और 19,26,351 बल्क वोटर शामिल हैं। उनका कहना था कि इन आंकड़ों के हिसाब से हर आठवां वोटर फर्जी है। उन्होंने आरोप लगाया कि फॉर्म-6 और फॉर्म-7 का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग करके नाम जोड़े और हटाए गए, और इसके बावजूद चुनाव आयोग ने इन सूचनाओं तक पहुंच सीमित कर दी। राहुल गांधी ने इसे लोकतंत्र की प्रक्रिया को कमजोर करने का गंभीर मामला बताया।

प्रेस वार्ता में राहुल गांधी ने एक गंभीर उदाहरण भी पेश किया। उन्होंने ब्राजील की एक मॉडल की तस्वीर दिखाते हुए कहा कि इसी फोटो का इस्तेमाल हरियाणा के कई बूथों पर 22 बार वोट डालने के लिए किया गया। इसके अलावा, उन्होंने बताया कि शशांक गिरि ने दो बूथों पर 14 बार मतदान किया और दो भाइयों—रुद्राभिषेक जैन और नमन जैन—ने 18 बार वोट डाले। राहुल गांधी ने कहा कि इतनी बड़ी गड़बड़ी के बावजूद कांग्रेस पार्टी हरियाणा में केवल 22,779 वोटों से हारी, और इसे उन्होंने "संगठित साजिश" करार दिया।

राहुल गांधी ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का एक वीडियो भी दिखाया, जिसमें वह नतीजे आने से पहले ही कहते दिख रहे हैं कि "बीजेपी एकतरफा सरकार बना रही है।" राहुल ने इसे चुनाव परिणामों में पूर्वनियोजित खेल का प्रमाण बताया। उन्होंने यह भी कहा कि पहली बार पोस्टल बैलेट और अंतिम परिणामों में इतना बड़ा अंतर देखने को मिला, जिससे युवाओं के "मताधिकार पर सीधा प्रहार" हुआ।

बिहार में अगले चरण के मतदान को लेकर राहुल गांधी ने गंभीर चेतावनी दी। उन्होंने मंच पर बिहार के कुछ मतदाताओं को बुलाया और बताया कि उनके और उनके परिवार के नाम बिना किसी कारण वोटर लिस्ट से गायब कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि देश में अब लोकतंत्र को जेन-जी और युवा ही सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर बचा सकते हैं। राहुल गांधी ने चुनाव आयोग से तत्काल जांच की मांग की और कहा कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर करने वाली हर कोशिश का खुलासा होना चाहिए।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, राहुल गांधी की इस प्रेस वार्ता ने हरियाणा में चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता और लोकतांत्रिक प्रणाली की सुरक्षा को लेकर बहस को नई दिशा दी है। उनके आरोपों से न केवल हरियाणा के चुनाव परिणामों पर सवाल उठे हैं, बल्कि आगामी बिहार विधानसभा चुनावों में भी प्रशासन और चुनाव आयोग की साख पर गहरी निगाहें टिकी हुई हैं। इस प्रेस कांफ्रेंस के बाद विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच चुनावी रणनीति, मतदाता सूची की पारदर्शिता और फर्जी मतदाताओं की पहचान के मुद्दे पर गर्म बहस होने की संभावना है।

राहुल गांधी ने प्रेस वार्ता में स्पष्ट कहा कि लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने-हारने का नाम नहीं है, बल्कि यह प्रक्रिया, पारदर्शिता और हर नागरिक के मताधिकार की सुरक्षा पर आधारित है। उनके अनुसार, जब तक इस तरह की गड़बड़ियों और फर्जी मतदाता सूची का खुलासा नहीं होता, देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को पूरी तरह सुरक्षित नहीं माना जा सकता। उन्होंने जनता और मीडिया से अपील की कि इस मामले पर लगातार निगरानी रखी जाए और चुनाव आयोग की कार्रवाई को सुचारू रूप से लागू किया जाए।

यह प्रेस कांफ्रेंस राजनीतिक हलकों में तेजी से चर्चा का विषय बन गई है। राहुल गांधी के आरोपों ने न केवल हरियाणा में पिछले विधानसभा चुनावों की निष्पक्षता पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि आने वाले बिहार चुनाव और देशभर के लोकतांत्रिक ढांचे में पारदर्शिता बनाए रखने के मुद्दे को भी फिर से जीवंत कर दिया है।

नदिया में पुलिस और बीएसएफ के बीच भिड़ंत, अवैध कफ सीरप बरामदगी को लेकर मचा बवाल, कई पुलिसकर्मी घायल

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में मंगलवार रात भारत-बांग्लादेश सीमा के नजदीक चापड़ा इलाके में पुलिस और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के बीच हुई झड़प ने पूरे क्षेत्र में तनाव फैला दिया। मामला अवैध कफ सीरप की बरामदगी से जुड़ा बताया जा रहा है, जिसके चलते दोनों सुरक्षा एजेंसियों के बीच तीखी नोकझोंक, धक्का-मुक्की और फिर हाथापाई की स्थिति पैदा हो गई। इस विवाद में कई पुलिसकर्मी घायल हो गए, जबकि पुलिस ने झड़प के दौरान एक बीएसएफ जवान को हिरासत में भी ले लिया था। देर रात तक दोनों पक्षों के बीच माहौल तनावपूर्ण बना रहा। घटना की शुरुआत उस समय हुई जब चापड़ा थाना पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि करिमपुर से कृष्णनगर की ओर जा रही एक बस में भारी मात्रा में प्रतिबंधित कफ सीरप फेंसिडिल की खेप तस्करी के लिए भेजी जा रही है। सूचना मिलते ही पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए बस का पीछा किया और उसे सीमामनगर स्थित बीएसएफ कैंप के पास रोक लिया। तलाशी के दौरान बस से कफ सीरप की बड़ी मात्रा बरामद हुई। पुलिस जब्त माल को कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई की तैयारी कर रही थी, तभी घटनास्थल पर कुछ बीएसएफ कर्मी पहुंच गए।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मौके पर पहुंचे बीएसएफ जवानों ने जब्त माल को अपने कब्जे में लेने की कोशिश की। इस पर दोनों पक्षों में कहासुनी शुरू हो गई जो देखते-देखते विवाद में बदल गई। तनाव इतना बढ़ गया कि पुलिस और बीएसएफ के बीच धक्का-मुक्की और फिर हाथापाई तक की नौबत आ गई। सूत्रों के मुताबिक, झड़प में कई पुलिसकर्मी घायल हो गए जिन्हें पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने इस दौरान मौके पर मौजूद एक बीएसएफ जवान को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी थी।

घटना की खबर मिलते ही जिले के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे और दोनों पक्षों को शांत कराया। देर रात तक इलाके में भारी पुलिस बल तैनात किया गया ताकि किसी अप्रिय स्थिति से बचा जा सके।

वहीं, इस पूरे घटनाक्रम पर बीएसएफ की ओर से देर रात बयान जारी कर स्थिति स्पष्ट करने की कोशिश की गई। बीएसएफ ने कहा कि यह पूरा मामला "एक सामान्य गलतफहमी" के कारण हुआ था। बयान में कहा गया कि जब्ती की कार्रवाई पुलिस के अधिकार क्षेत्र में थी, और बीएसएफ के जवान केवल सहयोग के लिए पहुंचे थे। बीएसएफ के अनुसार, सादी वर्दी में मौजूद एक जवान को पुलिस ने गलतफहमी में हिरासत में ले लिया था, जिसे बाद में छोड़ दिया गया।

बीएसएफ ने यह भी बताया कि बरामद किया गया फेंसिडिल फिलहाल पुलिस की अभिरक्षा में है और अब दोनों एजेंसियों के बीच समन्वय स्थापित कर लिया गया है। अधिकारियों के अनुसार, मामले की संयुक्त जांच की जाएगी ताकि तस्करी के पूरे नेटवर्क तक पहुंचा जा सके।

स्थानीय सूत्रों का कहना है कि भारत-बांग्लादेश सीमा से सटे नदिया जिले में फेंसिडिल की तस्करी लंबे समय से एक बड़ी समस्या बनी हुई है। पुलिस और बीएसएफ दोनों ही इस अवैध कारोबार को रोकने में जुटी रहती हैं, लेकिन कई बार सीमावर्ती अधिकार क्षेत्र को लेकर ऐसे विवाद खड़े हो जाते हैं। मंगलवार की रात हुई झड़प उसी तनावपूर्ण समन्वय का परिणाम मानी जा रही है। घटना के बाद क्षेत्र में स्थिति सामान्य बताई जा रही है, लेकिन चापड़ा थाना क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है।

किश्तवाड़ में सुरक्षा बलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़, एक जवान घायल, तलाशी अभियान जारी

(जीएनएस)। किश्तवाड़। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के छत्रू सब-डिवीजन में बुधवार को सुरक्षा बलों और आतंकियों के बीच तेज मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ का केंद्र नायदगाम क्षेत्र का कलाबन जंगल रहा, जो दुर्गम और कठिनाई भरा इलाका है। इस मुठभेड़ में सेना का एक जवान घायल हुआ, जिसे तुरंत उपचार के लिए नजदीकी सैन्य अस्पताल में भर्ती कराया गया।

घटना की जानकारी के अनुसार यह कार्रवाई खुफिया इनपुट के आधार पर शुरू की गई थी। व्हाइट नाइट कॉर्प्स और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने संयुक्त रूप से क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन आरंभ किया था। जैसे ही आतंकियों की मौजूदगी का पता चला, सुरक्षा बलों ने उन्हें घेर लिया। इस दौरान आतंकियों ने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके जवाब में सेना और पुलिस की ओर से भी कार्रवाई की गई।

व्हाइट नाइट कॉर्प्स ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर जानकारी साझा करते हुए बताया कि छत्रू क्षेत्र में दोनों ओर से फायरिंग जारी है और स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए अतिरिक्त बल मौके पर भेजे गए हैं। अधिकारियों ने कहा कि पूरे इलाके को घेरकर किसी भी आतंकी के फरार होने की संभावना को समाप्त किया जा रहा है।

स्थानीय सूत्रों ने बताया कि कलाबन जंगल बेहद दुर्गम और पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है, जिससे ऑपरेशन को संभलकर अंजाम दिया जा रहा है। सुरक्षा एजेंसियां सघन तलाशी अभियान चला रही हैं और इलाके में तनाव की स्थिति को देखते हुए नागरिकों से सावधानी बरतने की अपील की गई है। मौके पर सेना और पुलिस की संयुक्त टीम लगातार स्थिति पर नजर बनाए हुए है। उन्होंने बताया कि घायल जवान की हालत स्थिर है और सुरक्षा बलों ने इलाके में नियंत्रण बनाए रखने के लिए अतिरिक्त ड्रोन और पैट्रोलिंग टीमों को भी तैनात किया है। फिलहाल तलाशी और मुठभेड़ जारी है और अधिकारियों का कहना है कि क्षेत्र में पूरी तरह से आतंकियों की मौजूदगी समाप्त होने तक ऑपरेशन जारी रहेगा।

यह मुठभेड़ जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद रोधी अभियानों का एक हिस्सा है। पिछले कुछ महीनों में किश्तवाड़ और आसपास के क्षेत्रों में आतंकियों की गतिविधियों में बढ़ोतरी देखी गई है, जिसके चलते सुरक्षा बल सतर्क हैं और ऐसे अभियान नियमित रूप से चलाए जा रहे हैं। अधिकारियों का कहना है कि यह अभियान आतंकवादियों के नेटवर्क को ध्वस्त करने और स्थानीय नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है।

केंटकी में मालवाहक विमान दुर्घटना से मचा हाहाकार, सात लोगों की मौत, इंजन में लगी आग बनी हादसे की वजह

(जीएनएस)। वाशिंगटन। अमेरिका के केंटकी प्रांत के लुइसविले शहर में बुधवार की सुबह एक भयानक विमान हादसे ने पूरे क्षेत्र में दहशत फैला दी। यूपीएस (UPS) कंपनी का बोइंग 747 मालवाहक विमान मोहम्मद अली अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के कुछ ही मिनट बाद आग की लपटों में घिर गया और जोरदार धमाके के साथ धराशायी हो गया। इस भीषण हादसे में कम से कम सात लोगों की मौत हो गई है। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि विमान के इंजन में अचानक आग लगने से यह दुर्घटना हुई।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि विमान ने रनवे से उड़ान भरी ही थी कि कुछ ही क्षण बाद उसके एक इंजन से तेज़ धमाके की आवाज़ आई। कुछ सेकंड में ही विमान ने हवा में झटके खाए और फिर नीचे आते हुए आग के गोले में बदल गया। स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग 5:30 बजे यह हादसा हुआ जब आसमान में अभी हल्की रोशनी थी। विमान में करीब 3,800 गैलन ईंधन भरा हुआ था, जिससे आग तेजी से फैल गई और चारों ओर काला धुआं छा गया। स्थानीय प्रशासन ने तुरंत आपातकालीन सेवाओं को अलर्ट किया और दमकलकर्मियों ने घटनास्थल पर पहुंचकर राहत और बचाव अभियान शुरू किया। हालांकि आग की तीव्रता इतनी अधिक थी कि विमान पूरी तरह जलकर खाक हो गया। संघीय विमानन प्रशासन

(एफएए) के अधिकारियों ने बताया कि विमान में दो पायलट और एक इंजीनियर सवार थे, लेकिन मलबे से सात शव बरामद हुए हैं। इससे यह आशंका जताई जा रही है कि पास में मौजूद ग्राउंड स्टाफ या हवाई अड्डे के कर्मचारी भी इस आग की चपेट में आ गए होंगे।

दुर्घटना स्थल से मिली शुरुआती वीडियो फुटेज में आसमान तक उठता धुआं और दर्जनों दमकलकर्मी आग बुझाने में जुटे नजर आए। इलाके को तुरंत घेराबंदी कर दिया गया और सभी उड़ानों को अस्थायी रूप से रोक दिया गया। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, कई घायलों को गंभीर अवस्था में भर्ती कराया गया है।

यूपीएस कंपनी ने इस हादसे पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा, "हम इस दुखद घटना से बेहद व्यथित हैं। यह हमारे कर्मचारियों और उनके परिवारों के लिए एक असहनीय क्षण है। हम जांच एजेंसियों के साथ हर संभव सहयोग कर रहे हैं।" कंपनी ने ऐहतियातन अपनी सभी उड़ानों को अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया है और प्रभावित परिवारों की मदद के लिए एक विशेष सहायता टीम गठित की है।

राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड (NTSB) ने घटना की जांच शुरू कर दी है। शुरुआती रिपोर्ट के अनुसार, मौसम पूरी तरह अनुकूल था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दुर्घटना की मुख्य वजह इंजन फेल होना या तकनीकी खराबी रही होगी। जांच एजेंसियां विमान के ब्लैक बॉक्स की तलाश कर रही हैं, ताकि हादसे से पहले की स्थिति का पता लगाया जा सके।

वहीं विशेषज्ञों का कहना है कि अमेरिका में हाल ही में जारी सरकारी शटडाउन का असर विमानन सुरक्षा प्रणाली पर भी पड़ा है। संघीय विमानन प्रशासन (एफएए) के कई कर्मचारी बिना वेतन अवकाश पर हैं, जिससे विमान निरीक्षण और हवाई यातायात नियंत्रण में बाधा आई है। इससे सुरक्षा मानकों पर सवाल उठने लगे हैं।

घटनास्थल पर तैनात एक अधिकारी ने बताया कि आग बुझाने में करीब चार घंटे का समय लगा। आसपास के कई घरों और वाहनों को भी नुकसान पहुंचा है। स्थानीय नागरिकों में हादसे को लेकर दहशत का माहौल है, जबकि प्रशासन ने मलबे को हटाने और शवों की पहचान के लिए विशेष टीमों को लगाया है।

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट अभियान 4 .0 : पेंशनर्स अब घर बैठे जीवन प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकेंगे

(जीएनएस)। नई दिल्ली। प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्यमंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बुधवार को देशव्यापी डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट (डीएलसी) अभियान 4.0 का शुभारंभ किया। यह अभियान 30 नवंबर तक चलेगा और इसका उद्देश्य पेंशनभोगियों के लिए जीवन प्रमाण पत्र की प्रक्रिया को सरल और सुविधाजनक बनाना है। डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट के माध्यम से अब पेंशनर्स को हर साल बैंक या सरकारी कार्यालयों का चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं होगी और उन्हें घर बैठे ही यह सुविधा उपलब्ध होगी। अभियान की शुरुआत के पहले चार दिनों में ही 55 लाख से अधिक डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट जारी किए जा चुके हैं। पूरे महीने के लक्ष्य के रूप में दो करोड़ सर्टिफिकेट जारी करने का लक्ष्य रखा गया है। इस बार अभियान 4.0 के तहत देशभर के लगभग 2,000 जिलों और शहरों में 2,500 शिविर लगाए जा रहे हैं, जिनका संचालन 1,250 नोडल अधिकारी करेंगे।

इस डिजिटल पहल में 19 पेंशन वितरण बैंक, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक, यूआईडीएआई, एमईआईटीवाई, ईपीएफओ, रेलवे और दूरसंचार विभाग जैसी प्रमुख संस्थाएँ भाग ले रही हैं। विशेष रूप से इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के माध्यम से 1.8 लाख डाक कर्मचारियों द्वारा 1,600 से अधिक स्थानों पर घर-घर जाकर पेंशनभोगियों को जीवन प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया जा रहा है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि इस बार अभियान में फेस ऑथेंटिकेशन तकनीक को विशेष रूप से बढ़ावा दिया जा रहा

है, ताकि बुजुर्ग पेंशनर्स को अधिक सुविधा मिल सके। उन्होंने इसे दुनिया में एक अनूठा प्रयोग बताते हुए कहा कि यह पहल न केवल प्रशासनिक दक्षता बढ़ा रही है, बल्कि समाज को तकनीक-मैत्री बनाने में भी मदद कर रही है।

विशेषज्ञों का कहना है कि डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट योजना पेंशन वितरण प्रणाली में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ समय और संसाधनों की बचत भी कर रही है। यह पहल बुजुर्ग पेंशनर्स के लिए तकनीकी रूप से सहज और सुविधाजनक होने के कारण देशभर में सराहनीय मानी जा रही है। डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट के माध्यम से सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि पेंशनभोगियों को उनके अधिकार समय पर और आसानी से मिलें, जिससे उन्हें किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

इस अभियान के तहत सरकार ने तकनीकी सुविधाओं के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर सहायता केंद्रों की व्यवस्था भी सुनिश्चित की है, ताकि हर पेंशनभोगी इस सुविधा का लाभ उठा सके। डॉ. सिंह ने उम्मीद जताई कि अभियान 4.0 के सफल समापन के बाद भविष्य में यह प्रणाली और अधिक प्रभावशाली और व्यापक रूप से लागू की जाएगी।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों से मुठभेड़, तीन ढेर, हथियार बरामद, ऑपरेशन जारी

(जीएनएस)। बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के अनाराम और मर्रीमल्ल जंगल में बुधवार को सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच तीव्र मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में अब तक तीन नक्सली ढेर हो गए हैं और मौके से बड़ी मात्रा में हथियार भी बरामद किए गए हैं। पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने इलाके को घेर लिया है और दोनों ओर से फायरिंग लगातार जारी है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, मुठभेड़ स्थल से जवानों ने कई हथियार और गोला-बारूद बरामद किए हैं। सुरक्षाबलों ने जंगल में सघन तलाशी अभियान शुरू किया हुआ है और नक्सलियों को पूरी तरह घेरने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुठभेड़ के दौरान इलाके में सुरक्षा व्यवस्था को कड़ा किया गया है ताकि आम नागरिक सुरक्षित रहें और नक्सलियों के पीछे किसी भी तरह का बचाव मार्ग न बचे।

बस्तर के आईजी सुंदरराज पी. ने इस मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए बताया कि जिले में माओवादी गतिविधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे प्रभावी अभियानों के अंतर्गत सुरक्षाबल लगातार सघन कार्रवाई कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बीजापुर के अनाराम और मर्रीमल्ल क्षेत्र में कई दिन से नक्सलियों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा था और बुधवार को हुई मुठभेड़ इसी का हिस्सा है।

सुरक्षा अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ स्थल पर बरामद हथियारों की मात्रा काफी बड़ी है, जो स्थानीय माओवादी नेटवर्क की ताकत को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन तब तक जारी रहेगा जब तक क्षेत्र में पूरी तरह से स्थिति नियंत्रण में नहीं आ जाती।

विशेषज्ञों के अनुसार, बीजापुर और बस्तर क्षेत्र में नक्सलियों के खिलाफ निरंतर अभियान चलाने से उनका नेटवर्क कमजोर होने की संभावना है, लेकिन कठिन और दुर्गम इलाके होने के कारण सुरक्षा बलों के लिए ऑपरेशन चुनौतीपूर्ण रहता है। सुरक्षाबलों ने क्षेत्र में सतर्कता बढ़ाई है और आगे भी नक्सलियों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए विशेष टीम तैनात की गई है।

जिले में चल रहे इस सघन अभियान के दौरान स्थानीय प्रशासन ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी सुरक्षा बलों को दें और जंगल क्षेत्रों में बिना जरूरी कारण प्रवेश न करें। इस मुठभेड़ ने छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के खिलाफ जारी सुरक्षा अभियानों की गंभीरता और सफलता को उजागर किया है।

भारतीय सेना ने रचा इतिहास, पहली बार आसमान से ड्रोन के ज़रिए भेदा लक्ष्य, त्रिशूल युद्धाभ्यास में दिखी स्वदेशी ताकत

(जीएनएस)। जोधपुर। भारतीय सेना ने बुधवार को इतिहास रच दिया जब उसने पहली बार युद्धाभ्यास के दौरान आसमान से ड्रोन के ज़रिए सटीक बम गिराकर लक्ष्यों को भेदा। जैसलमेर के पास आयोजित 'त्रिशूल' नामक इस उच्चस्तरीय सैन्य अभ्यास में सेना ने महाराज द्वारा नियंत्रित ड्रोन फोर्स को एकीकृत रूप से तैनात किया, जो पूरी तरह स्वदेशी तकनीक पर आधारित है। यह उपलब्धि 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में भारतीय रक्षा तंत्र की एक ऐतिहासिक छलांग मानी जा रही है।

त्रिशूल अभ्यास में प्रयोग किए गए मानव रहित हवाई प्रणालियाँ (यूएवी) पूरी तरह भारतीय विशेषज्ञता और संसाधनों से विकसित की गई हैं। इन ड्रोन का डिज़ाइन, विकास और उत्पादन दक्षिणी कमान की देखरेख में सेना की ईएमई कोर और देश के छोटे व मध्यम उद्योगों के सहयोग से किया गया। इस संयुक्त प्रयास ने न केवल आधुनिक युद्ध के स्वरूप को नई दिशा दी है, बल्कि यह भी साबित किया है कि भारत अब रक्षा तकनीक के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर तेज़ी से अग्रसर है।

अभ्यास के दौरान सेना ने इन ड्रोन प्रणालियों की सटीकता, नियंत्रण और ध्वंसक क्षमता की वास्तविक परिस्थितियों में जांच की। कठिन मौसम और सीमित दृश्यता के बावजूद ड्रोन ने निर्धारित लक्ष्य पर बम गिराकर उसे पूरी तरह नष्ट किया। अधिकारियों ने बताया कि ये स्वदेशी प्रणालियाँ न केवल टोही और निगरानी करने में सक्षम हैं, बल्कि लक्ष्य की पहचान और उस पर सटीक हमला करने की शक्ति भी रखती हैं। इन्हें भविष्य के 'नेटवर्क-सेंट्रिक वॉरफेयर' के लिए तैयार किया गया है, जहाँ तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का संयोजन युद्ध के परिणाम तय करेगा।

सेना के उच्च अधिकारियों के अनुसार, दक्षिणी कमान द्वारा विकसित यह पहल आने वाले वर्षों में भारत की युद्ध रणनीति में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी। फिलहाल सेना ने ड्रोन की तकनीकी विशेषताओं और उत्पादन क्षमता को सार्वजनिक नहीं किया है, लेकिन यह पुष्टि की गई है कि इन प्रणालियों की तैनाती जल्द ही कई परिचालन इकाइयों में की जाएगी।

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग, अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (SAC),निर्माण एवं अनुरक्षण समूह (CMG),
विद्युत एवं अग्नि अलार्म प्रणाली प्रभाग, जोधपुर टेकरा, अंबावाड़ी विस्तार पो.ओ.,अहमदाबाद – 380015
फ़ोन नंबर: (079) 26914907/08/17/01, फैक्स नंबर: (079) 26915800

ई-निविदा सूचना संख्या: I. SAC/CMG/EFASD/M/20/2025-26 दिनांक: 07.10.2025

शुद्धिपत्र संख्या 1 दिनांक: 31.10.2025

1. कार्यों का विवरण.

क्र.नं.	कार्य का शीर्षक	अनुमानित लागत निविदा के लिए रखी गई	पूरा होने की अवधि	बयाना राशि जमा (EMD)
1	39 एकड़ के नए SAC परिसर, बोपल, अहमदाबाद में GLR और नर्मदा जल पाइपलाइन नेटवर्क के लिए स्टार्टर पैनल की आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और कमीशनिंग - विद्युत कार्य।	रु. 21.30 लाख	04 महीने	रु. 42,600/-

2. उपरोक्त कार्यों के लिए बिक्री अवधि, बोली स्पष्टीकरण तिथि, निविदाएं प्राप्त करने की अंतिम तिथि और निविदाएं खोलने की नियत तिथि को निम्नानुसार संशोधित किया जाता है:

क्र.नं.	विवरण	NIT के अनुसार तिथियां	शुद्धिपत्र क्रमांक 1 के अनुसार संशोधित तिथि
1	वह अवधि जिसके दौरान निविदा दस्तावेज़ डाउनलोड किया जा सकता है	13.10.2025 को 10:00 बजे से 26.10.2025 को 17:00 बजे तक	13.10.2025 को 10:00 बजे से 16.11.2025 को 17:00 बजे तक।
2	बोली स्पष्टीकरण	13.10.2025 को 11:00 बजे से 27.10.2025 को 17:00 बजे तक	13.10.2025 को 11:00 बजे से 17.11.2025 को 17:00 बजे तक
3	बोली स्पष्टीकरण का उत्तर देने की अंतिम तिथि	29.10.2025 को 17:00 बजे तक।	19.11.2025 को 17:00 बजे तक
4	निविदाएं अपलोड करने की अंतिम तिथि और समय	30.10.2025 को 17:00 बजे तक।	20.11.2025 को 17:00 बजे तक।
5	निविदाएं खोलने की नियत तिथि और समय	31.10.2025 को 11:00 बजे (तकनीकी एवं वाणिज्यिक बोली)	21.11.2025 को 11:00 बजे (तकनीकी एवं वाणिज्यिक बोली)

3. उपरोक्त NITs में निर्धारित अन्य सभी शर्तें अपरिवर्तित रहेंगी।

समूह प्रमुख, CMG/SAC

हैवी लिफ्ट अंतरिक्ष प्रक्षेपण के दरवाज़े खुले

"अब इसरो के आगामी कार्यक्रमों में मार्च, 2026 तक सात अंतरिक्ष मिशनों को पूरा करने की योजना है, जिसमें गगनयान कार्यक्रम के तहत पहला मानव रहित परीक्षण शामिल है। इसके अलावा, इसरो 2040 तक चंद्रयान मिशन को पूरा करने, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन बनाने और भविष्य के लिए डॉकिंग जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों को विकसित करने पर काम कर ही रहा है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 2 नवंबर को, भारतीय नौसेना के लिए जीसैट-7आर का प्रक्षेपण करके अपनी दक्षता को एक बार फिर से साबित किया है। दक्षता इसलिए क्योंकि देश के सबसे शक्तिशाली रॉकेट लॉन्च व्हीकल मार्क-3 (एलवीएम-3) का इसमें इस्तेमाल हुआ था, जिसकी भार वहन क्षमता मोटे तौर पर 4000 किलोग्राम की थी, पर उसने जिस उपग्रह का प्रक्षेपण किया, उसका भार 4,410 किलोग्राम था। भारतीय धरती से प्रक्षेपित यह अब तक का सबसे भारी संचार उपग्रह है।

सीएमएस-03 (जीसैट-7आर) सैन्य संचार उपग्रह है, जिसका वित्तपोषण पूरी तरह से रक्षा मंत्रालय ने किया है। इसे हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षित, मल्टी-बैंड संचार लिंक प्रदान करने के लिए भारतीय नौसेना के उपयोग के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है। यह उपग्रह पोतों, पनडुब्बियों और विमानों के बीच आवाज, डेटा और वीडियो लिंक के लिए संचार नेटवर्क का काम करेगा। मुख्य मिशन के रूप में इसका काम समुद्री सुरक्षा और निगरानी है। यह पुराने जीसैट-7 (रुक्मिणी) की जगह लेगा, जो 2013 से सेवा में है। जीसैट-7 और जीसैट-7ए देश के समर्पित सैन्य संचार उपग्रह हैं। दिसंबर 2018 में प्रक्षेपित जीसैट-7ए, मुख्यतः वायुसेना के लिए डिज़ाइन किया गया है। थलसेना आंशिक रूप से इसकी लगभग 30 प्रतिशत क्षमता का उपयोग करती है।

हमारे संचार उपग्रह अपेक्षाकृत भारी होते हैं। इसरो की कोशिश होती है कि एक ही उपग्रह में व्यापक कवरेज, उच्च शक्ति और लंबी सेवा अवधि का मेल हो। पूरे देश और आसपास के समुद्रों की कवरेज के लिए, संचार पेलोड को कई आवृत्ति बैंडों में कई चैनलों की आवश्यकता होती है। इसके लिए कई बड़े एंटेना, उच्च-शक्ति एम्प्लीफायर, वेवगाइड, फ़िल्टर, स्विच कई एनालॉग ट्रांसपोंडरों या लचीले डिजिटल

प्रोसेसर की आवश्यकता होती है। करीब 12 से 15 साल तक कई किलोवाट बिजली की आपूर्ति के लिए, उपग्रहों में बड़े सौर पैनल, पर्याप्त बड़ी बैटरियां और पावर कंडीशनिंग इकाइयां होती हैं। इस वजह से वजन बढ़ता है।

चार हजार किलोग्राम से अधिक वज़न वाला जीसैट-7आर इसरो का यह पहला उपग्रह है, जिसे देश की धरती से दूरस्थ भू-समकालिक स्थानांतरण कक्षा में स्थापित किया गया है। इस प्रक्षेपण ने उस बाधा को तोड़ा, जो अपने प्रक्षेपकों की मदद से भारी उपग्रहों के प्रक्षेपण से हमें रोकती थी।

पिछले साल 19 नवंबर को एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के फैल्कन-9 रॉकेट का उपयोग करके इसरो ने जब जीसैट-एन2 या जीसैट-20 का प्रक्षेपण किया, तब उस बाधा का उल्लेख भारतीय मीडिया में हुआ था। भारत ने हालांकि 430 से अधिक विदेशी उपग्रहों को लॉन्च किया है, लेकिन जीसैट-20 इतना भारी था कि भारतीय प्रक्षेपण यान इसे अंतरिक्ष में ले जाने में असमर्थ थे। इस कारण इसरो को स्पेसएक्स के साथ साझेदारी करनी पड़ी। हमारे पास 4700 किलोग्राम के उस उपग्रह के प्रक्षेपण लायक रॉकेट नहीं है।

स्पेसएक्स का फैल्कन-9 रॉकेट 8,300 किलोग्राम तक के पेलोड को संभाल सकता है। भारत का रॉकेट 'द बाहुबली' या एलएमवी-3 अधिकतम 4000 से 4100 किलोग्राम तक के वजन को जियोस्टेशनरी ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटीओ) तक ले जा सकता है। बहरहाल यह उपलब्धि ज़रूर है कि हमने 4000 किलोग्राम वजन की क्षमता वाले रॉकेट से 4410 किलोग्राम के उपग्रह का प्रक्षेपण करने में सफलता हासिल कर ली। ऐसा करने के लिए रॉकेट के इंजन में कुछ परिवर्तन किए गए और उपग्रह को अपेक्षाकृत निचली कक्षा में स्थापित किया गया, जहां से वह अपने थ्रस्ट इंजन की सहायता से निर्धारित भूस्थिर कक्षा में चला जाएगा।

इसरो को भारी प्रक्षेपण-यान (एचएलवी) विकसित करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जो वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में इसकी क्षमताओं को काफी हद तक प्रभावित कर सकता है। इसरो को संसाधनों और उन्नत इंजन प्रौद्योगिकी, दोनों की ज़रूरत है। इसरो ने सेमी-क्रायोजेनिक इंजन पर पूरी तरह से महारत हासिल नहीं की है, जो भारी-भरकम क्षमता के लिए आवश्यक है। हमारा एलएमवी-3, भारी वाहनों के अंतरराष्ट्रीय मानकों से कम है और इसकी पेलोड क्षमता चीन के लॉन्ग मार्च-5 जैसे तुलनीय रॉकेटों की एक तिहाई से भी कम है। इसरो को उच्च-थ्रस्ट वेरिएंट और उन्नत इंजन की ज़रूरत है।

इसरो का ऐतिहासिक दृष्टिकोण धीमी गति से विकास करने का रहा है, पर अब व्यावसायिक कारणों से परिस्थिति बदली है। नए रॉकेटों के लिए विकास में आमतौर पर दस साल से अधिक का समय लगता है और पर्याप्त निवेश की आवश्यकता भी होती है। इसके लिए घरेलू मांग भी अपर्याप्त है। बहरहाल, इसरो ने नेक्स्ट जनरेशन लॉन्च व्हीकल (एनजीएलवी) पर काम शुरू कर दिया है, जिसे 'प्रोजेक्ट सूर्य' के नाम से भी जाना जाता है। इसके विकास के लिए पिछले साल कैबिनेट ने 8,239 करोड़ रुपये के बजट के साथ स्वीकृति दे दी थी। इसे 10 से 24 टन तक के पेलोड को जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटीओ) तक पहुंचाकर अपनी भारी-भरकम क्षमता को बढ़ाना है। लो अर्थ ऑर्बिट (एलईओ) तक यह 30 टन तक का भार ले जा सकेगा।

यह कदम भारतीय स्पेस स्टेशन की स्थापना और संचालन करने और 2040 तक चालक दल के साथ चंद्र लैंडिंग को पूरा करने की भारत की महत्वाकांक्षा को भी पूरा करेगा। एनजीएलवी कार्यक्रम को कुल मिलाकर 96 महीनों (8 वर्ष) में लागू किया जाएगा। इसमें कार्यक्रम प्रशासन, सुविधा स्थापना और तीन विकासात्मक उड़ानों (डी 1, डी 2 और डी 3) के लिए वित्तपोषण शामिल है। इसकी पहली विकास उड़ान 2031 के लिए निर्धारित की गई है।

पहला व्यावहारिक प्रक्षेपण 2034-2035 के आसपास संभवतः भारतीय स्पेस स्टेशन को लॉन्च करने के लिए किया जाएगा और उसके बाद 2040 के मानवयुक्त चंद्र-अभियान के लिए भी। शुरुआत में, इसका उपयोग कक्षा में सामग्री भेजने के लिए किया जाएगा। एक बार जब इंजन मानव-रेटिंग प्रमाणन पास कर लेगा, तब भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों की चंद्रमा-यात्रा में इसका इस्तेमाल होगा। इसका मतलब है कि हमें स्वदेशी भारी और उन्नत प्रक्षेपण क्षमताओं के लिए इंतजार करना होगा।

भारत की ज़रूरत केवल भारी प्रक्षेपण वाहन की ही नहीं है, बल्कि हल्के वाहनों का बाजार भी तेजी से बढ़ रहा है। भारत ने हाल के वर्षों में हल्के उपग्रहों का प्रक्षेपण काफी संख्या में किया है। इस सिलसिले में पिछले साल 16 अगस्त को स्मॉल सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (एसएसएलवी-डी3) के सफल प्रक्षेपण के साथ महत्वपूर्ण छलांग लगाई थी। इस प्रकार एसएसएलवी का विकासात्मक चरण पूरा हो गया है। एसएसएलवी को 500 किलोग्राम तक के लघु, सूक्ष्म और नैनो उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए एक किफायती समाधान के रूप में डिज़ाइन किया गया है। इसके सफल विकास से वैश्विक लघु उपग्रह प्रक्षेपण बाजार में भारत की उपस्थिति बढ़ेगी।

इस साल जून में इसरो ने, तकनीकी हस्तांतरण समझौते के तहत एसएसएलवी रॉकेट के निर्माण, विपणन और लॉन्च के अधिकार एचएएल को प्रदान कर दिए। अब इसरो लॉन्च के लिए पांच एसएसएलवी रॉकेटों के प्रारंभिक बैच की आपूर्ति के लिए एलएंडटी के साथ साझेदारी में एचएएल को एक अनुबंध देने की योजना बना रहा है। इस तरह से इस क्षेत्र में निजी क्षेत्र का प्रवेश भी होगा, जिससे भारत में स्पेसएक्स जैसी कंपनी के लिए रास्ता खुलेगा।

अब इसरो के आगामी कार्यक्रमों में मार्च, 2026 तक सात अंतरिक्ष मिशनों को पूरा करने की योजना है, जिसमें गगनयान कार्यक्रम के तहत पहला मानव रहित परीक्षण शामिल है। इसके अलावा, इसरो 2040 तक चंद्रयान मिशन को पूरा करने, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन बनाने और भविष्य के लिए डॉकिंग जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों को विकसित करने पर काम कर ही रहा है।

संपादकीय

भयावह असमानता

उदारीकरण व वैश्वीकरण के दौर के बाद पूरी दुनिया में आर्थिक असमानता अपने चरम पर जा पहुंची है। एक तरफ लोग मूलभूत सुविधाओं के अभाव में सड़कों पर उतर रहे हैं तो दूसरी ओर अमीर से और अमीर होते लोगों की विलासिता के किस्से तमाम हैं। जिस बात की पुष्टि स्वतंत्र विशेषज्ञों के जी-20 पैनल द्वारा किए एक अध्ययन के निष्कर्षों में की गई है। इस अध्ययन के अनुसार, वर्तमान में वैश्विक स्तर पर असमानता भयावह स्तर तक जा पहुंची है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2000 और 2024 के बीच दुनिया भर में बनी नई संपत्तियों का बड़ा हिस्सा दुनिया के सबसे अमीर एक प्रतिशत लोगों के पास है। जबकि निचले स्तर की आधी आबादी के हिस्से में एक प्रतिशत ही आया है। निस्संदेह, भारत भी इस स्थिति में अपवाद नहीं है। देश के सबसे अमीर एक फीसदी लोगों ने केवल दो दशक में अपनी संपत्ति में 62 फीसदी की वृद्धि की है। दुनिया की इस चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में अमीर लगातार अमीर होते जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर गरीब गुरबत के दलदल से बाहर आने के लिए छटपटा रहे हैं। इस आर्थिक असमानता का ही नतीजा है कि अमीर व गरीब के बीच संसाधनों का असमान वितरण और बदतर स्थिति में पहुंच गया है। निस्संदेह, पैनल की हालिया रिपोर्ट नीति-निर्माताओं को असमानता के इस बढ़ते अंतर को पाटने के तरीके तलाशने और नये साधन खोजने के लिये प्रेरित करेगी। पिछले ही हफ्ते, केरल सरकार ने दावा किया था कि राज्य ने अत्यधिक गरीब तबके की गरीबी का उन्मूलन कर दिया है। हालांकि, कुछ विशेषज्ञों ने इन दावों को लेकर संदेह जताया है। वहीं दूसरी ओर राज्य के विपक्ष ने भी इन दावों को सिरे से खारिज कर दिया है। लेकिन इसके बावजूद राज्य में जन-केंद्रित विकास और सामुदायिक भागीदारी के लाभों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। निस्संदेह, इस पहल ने हजारों अत्यंत गरीब परिवारों को भोजन, स्वास्थ्य सेवा और आजीविका के बेहतर साधनों तक पहुंचने में मदद की है।

इसमें दो राय नहीं कि यदि सरकारें वोट बैंक की राजनीति से इतर ईमानदारी से पहले करें तो गरीबी उन्मूलन की दिशा में सार्थक पहल की जा सकती है। चुनाव से पहले मुफ्त की रेवड़ियां बांटने की तेजी से बढ़ती प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। यह एक हकीकत है कि कोई भी सुविधा मुफ्त नहीं हो सकती। इस तरह की लोकलुभावनी कोशिशों से राज्यों का वित्तीय घाटा ही प्रभावित होता है। जिसकी कीमत लोगों को विकास योजनाओं से दूर रहकर ही चुकानी पड़ती है। जनता को मुफ्त में सुविधाएं देने के बजाय ऋण व अनुदान से उत्पादकता बढ़ाकर उन्हें स्वावलंबी बनाना होगा। प्रत्येक चिन्हित गरीब परिवार के लिए सूक्ष्म योजनाएं तैयार करना और उन्हें क्रियान्वित करना उचित होगा। निस्संदेह, देश के अन्य राज्य भी अपनी जरूरतों और परिस्थितियों के अनुसार केरल के मॉडल को अपना सकते हैं। इसमें केंद्र व राज्य सरकारों को अनुकूल आंकड़ों का सहारा लेना भी जरूरी होगा। इस साल की शुरुआत में, विश्व बैंक ने बताया था कि भारत 2011-12 और 2022-23 के बीच 17 करोड़ लोगों को गरीबी की दलदल से बाहर निकालने में सफल रहा है। केंद्र सरकार ने अपने काम के लिये खुद की पीठ भी थपथपाई थी। हालांकि, गरीबी के अनुमानों की रिपोर्टिंग की कार्यप्रणाली को लेकर सवाल उठाये गए थे। निर्विवाद रूप से सभी हितधारकों को यह तथ्य समझना होगा कि केवल संख्याएं ही पूरी तस्वीर को नहीं उकेर सकती हैं। गरीबी कम करने के प्रयासों के दावों के मुताबिक जमीनी स्तर पर गुणात्मक बदलाव नजर भी आना चाहिए। हालांकि, अर्थशास्त्री आमतौर पर संपत्ति कर लगाने के पक्षधर नहीं होते हैं, लेकिन सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अति-धनी लोग सरकारी खजाने में अपना उचित योगदान दें। अब चाहे कोई अमीर हो या गरीब, सबका ध्यान विकास पर केंद्रित किया जाना चाहिए। तभी देश उत्पादकता के क्षेत्र में आगे बढ़कर गरीबी उन्मूलन की दिशा में सार्थक प्रगति कर सकता है। यह पहल ही विकसित भारत के सपने को साकार करने में मददगार साबित हो सकती है।

प्रेरणा

क्रांति की सार्थकता: जब सरदार पटेल ने युवाओं को दिखाई

एक बार की बात है। भारत में आज़ादी की लहर धीरे-धीरे देश के कोने-कोने में फैल रही थी। उस समय जनता में उत्साह तो था, पर दिशा की कमी थी। हर जगह 'क्रांति' का नारा गूंज रहा था, परंतु बहुत से लोग यह नहीं जानते थे कि असली क्रांति का अर्थ क्या है। ऐसे ही एक अवसर पर, जब भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल बिहार की धरती पर एक सभा को संबोधित करने पहुंचे, तो वहां उपस्थित असंख्य युवाओं ने उन्हें देखते ही जोर-जोर से नारे लगाने शुरू कर दिए — "क्रांति की जय! क्रांति की जय!"

सभा स्थल देशभक्ति के नारों से गूंज उठा। युवाओं की आंखों में जोश था, पर पटेल के शांत, दृढ़ चेहरे पर एक गहरा विचार झलक रहा था। उन्होंने सबको नारे लगाने दिया, और जब कुछ क्षणों बाद शोर थम गया, तो वे मृदु स्वर में बोले — "क्या आप क्रांति का अर्थ जानते हैं?" सभा में सन्नाटा छा गया। जो अभी तक जोश से चिल्ला रहे थे, वे अब मौन थे। पटेल ने कहा — "एक बार क्रांति करके दिखाइए, उसके बाद उसकी जय के नारे लगाइए। जिसका अस्तित्व ही न हो, उसकी जय-जयकार से क्या मतलब?"

उनके शब्दों ने मानो हर हृदय को झकझोर दिया। सभा में बैठे एक युवा ने साहस करके पूछा, "क्या अभी तक हमारे देश में कभी क्रांति नहीं हुई?"

पटेल ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, "हां, हुई है, अवश्य हुई है। लेकिन पूरे देश में कभी एक साथ क्रांति नहीं हुई। केवल कुछ क्षेत्रों में लोग उठ खड़े हुए, कुछ ने अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाई, परंतु सम्पूर्ण भारत एक साथ नहीं जगा। चंपारण की क्रांति हुई थी — वही जिसने पूरी दुनिया को दिखाया कि भारत के पास भी आत्मबल और सत्य की शक्ति है। उसी के आधार पर हम दुनिया में जाने गए।"

सभा में बैठे युवाओं के चेहरे पर जिज्ञासा थी। दूसरे युवक ने पूछा, "फिर ऐसा कब होगा जब पूरा देश एक स्वर में 'क्रांति की जय' बोलेगा?" पटेल मुस्कुराए, फिर बोले — "जब आप खुद बदलेंगे, तब पूरा देश बदलेगा। क्रांति का अर्थ केवल राजनैतिक परिवर्तन नहीं होता। असली क्रांति तब होती है जब व्यक्ति अपने भीतर की जड़ता, आलस्य, और अंधविश्वास को तोड़ देता है। जब वह दकियानूसी परंपराओं से ऊपर उठकर, सच्चाई और कर्म के रास्ते पर चलता है। जब प्रत्येक युवा यह ठान लेता है कि वह भीड़ का हिस्सा नहीं बनेगा, बल्कि अपने कर्म और चरित्र से ऐसा उदाहरण बनेगा कि जहां वह खड़ा हो जाए, वहां भीड़ लग जाए — तभी क्रांति होगी।"

उन्होंने युवाओं की ओर देखा और कहा, "देश के प्रति समर्पण और प्रेम की भावना से भरा हुआ मन ही सच्चे अर्थों में 'क्रांति की जय' बोलने का अधिकार रखता है। केवल शब्दों में नहीं, बल्कि कर्म में देशभक्ति दिखाइए। क्रांति के लिए तलवार से अधिक जरूरी है आत्मबल, अनुशासन और निःस्वार्थ सेवा की भावना।"

उनके शब्द मानो अग्नि की तरह युवाओं के हृदय में उतर गए। सभा में गूंज उठी आवाज़ — "हम सब अपने अंदर देशप्रेम की भावना को विकसित करेंगे! हम अपने देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हैं!"

पटेल ने गंभीर परंतु स्नेहभरे स्वर में कहा, "बस, यही सच्ची क्रांति है। जब हर युवा अपने भीतर यह संकल्प ले लेगा, तो वह दिन दूर नहीं जब पूरा भारत एक स्वर में बोलेगा — 'क्रांति की जय!'"

उस दिन की वह सभा केवल एक भाषण नहीं थी, बल्कि भारतीय युवाओं के आत्मजागरण की दिशा में एक ऐतिहासिक क्षण था। पटेल के शब्दों ने यह सिखाया कि क्रांति किसी बाहरी युद्ध का नाम नहीं, बल्कि यह भीतर की जंग है — अज्ञान, भय, स्वार्थ और आलस्य के विरुद्ध। जब यह युद्ध व्यक्ति के भीतर जीता जाता है, तभी समाज में परिवर्तन आता है, और तभी देश की आत्मा वास्तव में जागती है।

इस प्रकार सरदार वल्लभभाई पटेल ने उस दिन यह सिद्ध कर दिया कि सच्ची क्रांति का आरंभ बंदूक या नारे से नहीं, बल्कि विचार, चरित्र और कर्म से होता है। जब हर हृदय में देशप्रेम और सेवा का दीप जलता है, तब सम्पूर्ण राष्ट्र एक स्वर में गूंज उठता है — "क्रांति की जय!"

एक खूबसूरत बला: हाथ जोड़ने की कला और राजनीति की मुस्कान का रहस्य

चुनाव का मौसम देश में किसी उत्सव से कम नहीं होता। सड़कों पर झंडे लहराते हैं, दीवारें पोस्टरों से सज जाती हैं, माइक पर आवाज़ें गूंजती हैं और जनता का दिल अचानक राजनीति के रंगों में रंग जाता है। लेकिन इस पूरे नज़ारे के बीच एक और मौसम आता है, जो हर बार चुपचाप लौटता है—'हाथ जोड़ने का मौसम'। यह मौसम इतना पुराना, इतना पवित्र और इतना छलपूर्वक मोहक है कि इसकी हर अदा में नम्रता की जगह रणनीति छिपी होती है। हमारे समाज में नमस्ते करना शालीनता का प्रतीक है, आदर का चिह्न है, लेकिन चुनाव आते ही यह आदर एक कला में बदल जाता है—'हाथ जोड़ने की कला'।

कभी यह कला संस्कार हुआ करती थी, अब यह चालाकी बन चुकी है। पहले लोग सम्मान जताने के लिए नमस्ते करते थे, अब लोग समर्थन पाने के लिए करते हैं। यह बदलाव धीमे-धीमे आया, पर अब यह इतना गहरा हो गया है कि नेता के हाथ जुड़ते ही जनता समझ जाती है कि चुनाव पास हैं। इस कला के पीछे अब भावनाएँ नहीं, समीकरण होते हैं। मुस्कान के पीछे निष्ठा नहीं, प्रचार का अभ्यास होता है। और यह सब कुछ इतनी सहजता से होता है कि देखने वाला भ्रम में पड़ जाता है कि यह सचमुच आदर है या अभिनय।

ऐसे ही एक चुनावी चौराहे पर खड़े जनक लाल, जो राजनीति के 'मौसम विज्ञानी' माने जाते हैं, अपनी गहरी तिरछी नज़रों से इस कला का रहस्य समझाते हैं। उनका कहना है कि जो व्यक्ति हाथ जोड़ने के तरीके समझ ले, वह आदमी के मन का मौसम पढ़ सकता है। जनक लाल बताते हैं कि जब कोई नेता दोनों हाथों को सिर के ऊपर उठाकर भीड़ की ओर जोड़ता है, तो यह संकेत होता है कि वह समर्थन दूर से भी चाहता है। यह मुद्रा नमस्ते कम और जनभावनाओं को फँसाने का फंदा ज़्यादा होती है। मंच से यह दृश्य जब कैमरों में कैद होता है तो नेता की छवि जनता की नज़रों में 'लोकप्रिय' बन जाती है। लेकिन इस मुद्रा का एक दूसरा रूप भी है, जो आशीर्वाद जैसी लगती है। नेता मंच से हाथ जोड़ता है, फिर उन्हें खोलता है, हवा में लहराता है और बीच-बीच में मुस्कुराता है। देखने वाले को लगता है कि वह सबको आशीर्वाद दे रहा है, जबकि असल में यह भीड़ के साथ मानसिक दूरी बनाए रखने का तरीका है। यह 'मिथ्या निकटता' का अभिनय है—ऐसा अभिनय जो लोगों को यह महसूस कराता है कि नेता उन्हें देख रहा है, सुन रहा है, लेकिन सच में वह केवल खुद की छवि गढ़ रहा होता है। इसके बाद आता है सबसे प्रभावशाली और लोकलुभावन नमस्ते—घर-घर जाकर किया जाने वाला हाथ जोड़ना। यह वह मुद्रा है जिसमें उम्मीदवार अपने सीने के सामने हाथ जोड़कर कमर को थोड़ा झुकाता है और वोटर के दरवाज़े पर पहुँचकर दोनों हाथों को लगभग पैरों तक ले जाता है। यह विनम्रता का वह नाटकीय दृश्य है जो किसी थिएटर से कम नहीं। इसके पीछे की रणनीति साफ़ होती है—"वोटर का दिल जीतने के लिए पहले उसकी अहं को संतुष्ट करो।" इस अभिनय का असर अद्भुत होता है। बुजुर्ग महिलाएं दुआ देती हैं, नौजवान मुस्कुराते हैं, बच्चे हाथ हिलाते हैं और उम्मीदवार की गाड़ी थोड़ी आगे बढ़ते ही वही लोग हँसकर कहते हैं—"देखो, चुनाव आ गया है, अब सबके हाथ जुड़ गए हैं।"

जनक लाल की आंखों में शरारत झलकती है जब वे एक और अनोखा तरीका बताते हैं। इसमें नेता एक हाथ को सिर से ऊपर ले जाता है, हथेली खुली रखता है, दूसरे हाथ से टा-टा की मुद्रा बनाकर बार-बार जोड़ता है और फिर अलग कर देता है। यह दृश्य देखने में भले हंसी ला दे, पर जनक लाल कहते हैं—"इसका मतलब है, भैया... वोट दो, फिर पांच साल के लिए टा-टा बाय-बाय!" यह 'लोकतंत्र की विदाई मुद्रा' है, जो पांच साल की दूरी और झूठे वादों का संकेत देती है।

समाज बदल गया है, लेकिन हाथ जोड़ने की यह कला हर बार और परिष्कृत हो रही है। पहले इसमें भावनाएं थीं, अब इसमें पीआर एजेंसियों की स्क्रिप्ट है। पहले इसमें विनम्रता थी, अब इसमें वोटों का गणित है। अब तो ऐसे भी विशेषज्ञ हैं जो नेताओं को सिखाते हैं कि मुस्कुराते वक्त आंखों का कोण कितना झुकना चाहिए, हथेलियां किस ऊँचाई तक आनी चाहिए और सिर का झुकाव कितना 'ईमानदार' दिखना चाहिए। यह सब कुछ सिखाया जा रहा है, जैसे कोई मंच-प्रदर्शन हो।

'हाथ जोड़ने की कला' अब राजनीति का सबसे सुरक्षित हथियार है। यह न किसी को आहत करती है, न किसी से टकराती है, बस मन मोह लेती है। हर मुस्कान के पीछे एक रणनीति होती है और हर झुके हुए सिर के पीछे सत्ता का सपना। जनता जानती है कि यह अभिनय है, पर वह भी इस नाटक की दर्शक बन चुकी है। और जब चुनाव खत्म हो जाते हैं, तो वही हाथ जो कभी नमस्ते में जुड़े थे, अब आदेश में उठ जाते हैं।

यह कहानी केवल नेताओं की नहीं, यह पूरे लोकतंत्र की विडंबना है। 'नमस्ते' जो कभी आत्मा का भाव था, अब वोट का जाल बन गया है। 'हाथ जोड़ना' जो कभी सम्मान का प्रतीक था, अब एक खूबसूरत बला बन गया है—ऐसी बला जो हर पांच साल बाद आती है, मुस्कुराती है, वादे करती है, झुकती है, और फिर सत्ता के सिंहासन पर बैठकर जनता को दूर से टा-टा कर देती है। लोकतंत्र की यही सबसे बड़ी विडंबना है—जहां विनम्रता दिखती है, वहां स्वार्थ छिपा होता है; जहां मुस्कान चमकती है, वहां छल की चमक होती है। और जनता हर बार इस खूबसूरत बला के जाल में फंसकर सोचती रह जाती है कि शायद इस बार का हाथ जोड़ना सच में आदर का प्रतीक होगा। लेकिन अगले चुनाव आने तक वह समझ जाती है—यह सब एक अभ्यास था, एक कला थी, और यह कला सिर्फ सत्ता की सीढ़ी चढ़ने के लिए थी।

अभियान

शिव और चंद्रमा के अद्भुत रहस्यमय संबंध का शाश्वत रहस्य

हिंदू धर्म में भगवान शिव का स्वरूप सृष्टि के सबसे गूढ़ और अद्वितीय रहस्यों में से एक है। वे न तो केवल संहारक हैं, न ही केवल सृजनकर्ता — वे संपूर्ण ब्रह्मांड के संतुलन का वह केंद्र हैं, जहां विरक्ति और करुणा, कठोरता और कोमलता, अग्नि और शीतलता एक साथ निवास करते हैं। भगवान शिव का प्रत्येक आभूषण, प्रत्येक प्रतीक कोई साधारण वस्तु नहीं, बल्कि गहन दार्शनिक अर्थ लिए हुए है। गले में लिपटा सर्प समय का प्रतीक है, शरीर पर लगी भस्म जीवन की अस्थिरता का; जटाओं में गंगा प्रवाहमान चेतना का प्रतीक है, और मस्तक पर स्थित चंद्रमा शीतलता, संतुलन और अमरत्व का।

किंतु यह प्रश्न प्राचीन काल से मनुष्यों को आकर्षित करता आया है — जब भगवान शिव के मस्तक पर चंद्रमा विराजमान हैं, तो वे बाईं ओर ही क्यों स्थित हैं? क्या यह केवल एक सौंदर्यात्मक व्यवस्था है या इसके पीछे कोई ब्रह्मांडीय रहस्य छिपा हुआ है?

पुराणों के अनुसार, जब समुद्र मंथन हुआ था, तब उस मंथन से जो विष निकला, वह इतना प्रचंड और घातक था कि समस्त सृष्टि को नष्ट करने की क्षमता रखता था। देवता और दानव दोनों ही उस विष से भयभीत हो गए। तब भगवान शिव ने अपनी करुणा और त्याग का परिचय देते हुए उस विष को अपने कंठ में धारण किया, जिससे उनका कंठ नील हो गया और वे नीलकंठ कहलाए। उस विष की अग्नि से जब उनकी जटाएं और मस्तक प्रज्वलित होने लगे, तब चंद्रदेव ने आगे बढ़कर भगवान शिव के मस्तक पर स्थान लिया। चंद्रमा की शीतलता ने उस विष की उष्णता को संतुलित किया और महादेव को मानसिक और आध्यात्मिक शांति प्रदान की। इसीलिए आज भी चंद्रमा भगवान शिव के मस्तक की शोभा बढ़ाते हुए उन्हें चंद्रशेखर के नाम से अलंकृत करते हैं।

किन्तु चंद्रमा का स्थान बाईं ओर होना केवल इस कथा का परिणाम नहीं है; इसके पीछे गहरी योगिक और दार्शनिक व्याख्या निहित है। ज्योतिष और तंत्र के अनुसार, मानव शरीर स्वयं एक लघु ब्रह्मांड है। इसमें दाहिनी ओर पिंगला नाड़ी स्थित होती है, जो सूर्य, उष्मा, कर्म और पुरुष ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है। वहीं शरीर का बायां भाग

इड़ा नाड़ी का स्थान है, जो चंद्रमा, शीतलता, भावनाओं और स्त्री तत्व का प्रतीक है। जब भगवान शिव के मस्तक पर चंद्रमा को बाईं ओर स्थान दिया गया, तो यह इस दिव्य संतुलन का प्रतीक बना—जहां शिव की उग्रता और तांडव को चंद्रमा की शीतलता और करुणा संतुलित करती है।

चंद्रमा का स्थान बाईं ओर इस बात की भी घोषणा करता है कि शक्ति और भावना सदैव शिव के साथ रहती हैं। अर्धनारीश्वर स्वरूप में भगवान शिव के बाएं भाग में ही मां पार्वती विराजमान हैं, जो शक्ति, सृजन और भावनात्मक चेतना का प्रतीक हैं। चंद्रमा उसी स्त्री-ऊर्जा का दैवी प्रतीक है, इसलिए वह भी शिव के बाएं भाग में स्थित हैं। यह इस सत्य को उद्घाटित करता है कि शिव बिना शक्ति अधूरे हैं, और शक्ति का स्रोत सदैव भावनाओं, करुणा और शीतलता से ही प्रवाहित होता है।

अगर दार्शनिक दृष्टि से देखें, तो भगवान शिव ब्रह्मांड की ज्वलंत ऊर्जा का प्रतीक हैं — वह अग्नि जो सृष्टि को नष्ट भी करती है और पुनः रचती भी है। वहीं चंद्रमा उस चेतना का प्रतीक है जो उसी अग्नि को संयमित करती है। यदि शिव का तीसरा नेत्र संहारक ज्वाला है, तो उनके मस्तक का चंद्रमा उसी ज्वाला पर नियंत्रण रखने वाली शक्ति है। शिव और चंद्रमा का यह संयोग हमें यह सिखाता है कि जीवन में कठोरता और वैराग्य जितने आवश्यक हैं, उतनी ही आवश्यक है करुणा और भावनाओं की शीतलता। बिना चंद्रमा के शिव की अग्नि असंतुलित हो जाती, और बिना शिव के चंद्रमा अपनी शीतलता में स्थिर होकर निर्बल हो जाता।

आध्यात्मिक दृष्टि से यह स्थिति यह भी बताती है कि शिव का मस्तक चेतना का सर्वोच्च बिंदु है — 'सहस्रार चक्र'। जब चंद्रमा वहां विराजता है, तो यह संकेत देता है कि मन (चंद्र) को जब साधक पूरी तरह नियंत्रित कर लेता है, तभी वह शिवत्व को प्राप्त करता है। चंद्रमा का मस्तक पर होना इस 'मन की विजय' का प्रतीक है, और उसका बाईं ओर होना यह दर्शाता है कि यह विजय बलपूर्वक नहीं, बल्कि करुणा और शांति के मार्ग से प्राप्त की जाती है।

पौराणिक कथाओं में चंद्रदेव को कभी शापित और कभी वरदान प्राप्त करते हुए दिखाया गया है। लेकिन जब उन्होंने शिव का आश्रय लिया, तब उन्हें अमरत्व प्राप्त हुआ। यह इस सत्य का प्रतीक है कि जब मन (चंद्र) ईश्वर चेतना (शिव) में समर्पित हो जाता है, तभी वह स्थिर और अमर होता है।

इस प्रकार भगवान शिव के मस्तक पर बाईं ओर स्थित चंद्रमा केवल एक आभूषण नहीं, बल्कि एक पूर्ण दर्शन है — यह जीवन के संतुलन, ऊर्जा के समन्वय और भावनाओं की पवित्रता का प्रतीक है। शिव का मस्तक अग्नि का केंद्र है, और चंद्रमा उस अग्नि की शांति है। शिव का तांडव संहार है, और चंद्रमा उसमें छिपी सृजन की मधुरता।

इस गूढ़ रहस्य का सार यही है कि शिव और चंद्र, वैराग्य और भावना, तप और करुणा — सब एक ही परम सत्य के दो पहलू हैं। जब ये दोनों एक साथ संतुलित होते हैं, तभी ब्रह्मांड में सौंदर्य, शांति और सृष्टि का क्रम बना रहता है। इसलिए भगवान शिव के मस्तक पर चंद्रमा का बाईं ओर होना केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि ब्रह्मांड के अद्भुत संतुलन का दिव्य संकेत है — जहां अग्नि भी शांत है, और शीतलता भी प्रखर है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

दो-तिहाई बहुमत के साथ राजग की बनेगी सरकारः राजनाथ सिंह

(जीएनएस)। पटना/बांका। बिहार विधानसभा चुनाव के बीच बुधवार को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बांका में आयोजित एक विशाल जनसभा में दावा किया कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) राज्य में दो-तिहाई बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार ने विकास के नए आयाम स्थापित किए हैं और जनता अब स्थिरता तथा सुशासन को बरकरार रखना चाहती है।

राजनाथ सिंह ने विपक्षी दलों पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कांग्रेस और राजद पर आरोप लगाया कि ये दल सीमावर्ती इलाकों और पिछड़े क्षेत्रों के विकास की ओर कभी ध्यान नहीं देते। उन्होंने कहा कि कुछ दल केवल सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीति करते हैं, जबकि राजग जनता की भलाई के लिए कार्य करता है।

राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता सेना का राजनीतिकरण करने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि भारतीय सेना का कोई धर्म नहीं होता, उसका केवल एक ही धर्म है — "सैन्य धर्म"। उन्होंने कहा कि जब भी भारत पर संकट आया है, सेना ने देश की मर्यादा को ऊँचा रखा है और उसे राजनीति से दूर रखना आवश्यक है।

आरक्षण के मुद्दे पर भी राजनाथ सिंह ने विपक्ष के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि भाजपा और राजग आरक्षण के प्रबल समर्थक हैं। उन्होंने कहा कि गरीबों और वंचितों के उत्थान के लिए केंद्र सरकार लगातार योजनाएँ चला रही है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था आज वैश्विक स्तर पर नई ऊँचाइयाँ छू रही है।

राजनाथ सिंह ने नीतीश कुमार की ईमानदारी और प्रशासनिक क्षमता की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन पर भ्रष्टाचार का कोई दाग नहीं है, जबकि विपक्ष के कई नेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लंबित हैं। उन्होंने कहा कि राजद शासन में स्वास्थ्य बजट मात्र 700 करोड़ रुपये था, जो राजग सरकार में बढ़कर 20,000 करोड़ रुपये तक पहुँच गया है — यह बदलाव बताता है कि बिहार सरकार जनता के स्वास्थ्य और विकास के प्रति कितनी गंभीर है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में बिहार का कुल बजट 3 लाख करोड़ रुपये से अधिक है, जो राज्य की तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का संकेत है। सभा में राजनाथ सिंह ने यह भी कहा कि राजग जाति, धर्म या पंथ के आधार पर राजनीति नहीं करता। उन्होंने कहा कि गठबंधन की प्राथमिकता केवल विकास, शिक्षा, रोज़गार और सुरक्षा पर केंद्रित है। उन्होंने महागठबंधन पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वे समाज को बाँटने का काम करते हैं, जबकि राजग उसे जोड़ने में विश्वास रखता है।

अंत में रक्षा मंत्री ने कहा कि "ऑपरेशन सिंदूर" अब भी जारी है और यदि कोई आतंकी संगठन भारत की संप्रभुता को चुनौती देने की कोशिश करेगा, तो उसे माकूल जवाब दिया जाएगा। उन्होंने जनता से अपील की कि वे बिहार के विकास, स्थिरता और सुशासन के लिए नीतीश कुमार के नेतृत्व में राजग को एक बार फिर भारी बहुमत से जीत दिलाएँ।

एअर इंडिया का सर्वर ठप, देशभर में उड़ानें प्रभावित — दिल्ली एयरपोर्ट पर यात्रियों की भारी भीड़, मैनुअल चेक-इन से बढ़ी अफरातफरी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। बुधवार को एअर इंडिया के सर्वर में आई तकनीकी खराबी ने देशभर के यात्रियों की मुश्किलें बढ़ा दीं। दोपहर करीब 3 बजे से एयरलाइन की चेक-इन और लगेज सिस्टम पूरी तरह ठप पड़ गया, जिससे दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (IGI) सहित देश के अन्य प्रमुख एयरपोर्ट्स पर यात्रियों की लंबी कतारें लग गईं। सर्वर डाउन होने के कारण एयरलाइन को मजबूरन मैनुअल चेक-इन प्रक्रिया शुरू करनी पड़ी, जिससे उड़ानों के संचालन में भारी देरी देखने को मिली। ल्ली एयरपोर्ट के टर्मिनल-2 पर यात्रियों की स्थिति बेहद परेशान करने वाली रही। सैकड़ों लोग हाथों में टिकट और पासपोर्ट लेकर गेट के बाहर खड़े रहे, जबकि कुछ यात्री बुकिंग काउंटरों पर कर्मचारियों से जानकारी मांगते दिखे। एयरलाइन के एक अधिकारी ने पुष्टि करते हुए कहा कि यह समस्या केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है, बल्कि देश के सभी हवाई अड्डों पर एअर इंडिया का सर्वर अस्थायी रूप से ठप पड़ा है। उन्होंने आश्वासन दिया कि तकनीकी दल समस्या को ठीक करने में जुटा है और सिस्टम को जल्द बहाल कर दिया जाएगा।

इस बीच कई यात्रियों ने सोशल मीडिया पर एयर इंडिया की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताई। यात्रियों का कहना था कि न तो एयरलाइन की ओर से कोई आधिकारिक सूचना दी गई और न ही किसी प्रकार का ईमेल या मैसेज भेजकर अपडेट दिया गया। कुछ यात्रियों ने यह भी बताया कि सर्वर की समस्या कल से ही चल रही है, पर कंपनी ने इस पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

दिल्ली की यात्री संध्या ने बताया कि वह कल देहरादून से दिल्ली पहुंची थीं और आज विशाखापट्टनम के लिए उनकी कनेक्टिंग फ्लाइट थी। सर्वर में खराबी और फ्लाइट के लेट होने से उनका कनेक्शन टूट गया और उन्हें दोबारा टिकट बुक करनी पड़ी। उन्होंने कहा, "ना कोई मैसेज आया, ना कोई घोषणा हुई। लोग बस काउंटर के बाहर खड़े हैं और कोई जवाब नहीं मिल रहा।"

वहीं, एअर इंडिया की इस तकनीकी गड़बड़ी का असर अन्य एयरलाइनों पर भी दिखाई दिया। दिल्ली एयरपोर्ट पर हवाई यातायात धीमा पड़ गया, जिससे इंडिगो, विस्तारा और स्पाइसजेट जैसी एयरलाइनों की उड़ानें भी प्रभावित हुईं। इंडिगो ने शाम को एक एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि दिल्ली एयरपोर्ट पर असामान्य भीड़ और एयर ट्रैफिक की वजह से उड़ान संचालन में देरी हो सकती है। कंपनी ने यात्रियों को सलाह दी कि वे अपनी यात्रा से पहले वेबसाइट या मोबाइल ऐप पर उड़ान की वास्तविक स्थिति जांच लें।

सूत्रों के अनुसार, एअर इंडिया के सर्वर में यह समस्या उसके सेंट्रल डाटा नेटवर्क से जुड़ी है, जो टिकटिंग, चेक-इन और बैगेज सिस्टम को नियंत्रित करता है। तकनीकी विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की गड़बड़ी का कारण सॉफ्टवेयर अपडेट में हुई त्रुटि या नेटवर्क लिंक का बाधित होना हो सकता है।

वहीं, यात्रियों का धैर्य टूटने लगा है। एयरपोर्ट पर घंटों इंतजार के बाद कई लोगों ने टिकट रद्द कराने का निर्णय लिया। कुछ यात्रियों ने इसे एअर इंडिया के "खराब प्रबंधन" का उदाहरण बताया। अब देखना यह है कि एयरलाइन अपनी तकनीकी गड़बड़ी को कितनी जल्दी ठीक कर पाती है, क्योंकि फिलहाल देश के सबसे व्यस्त एयरपोर्ट पर अफरातफरी का माहौल कायम है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरु नानक जयंती के अवसर पर गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन-पूजन किए

मुख्यमंत्री ने गुरु ग्रंथ साहिब की पूजा-अर्चना कर राज्य के नागरिकों की सुख, समृद्धि, शांति और विकास के लिए अरदास की

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने श्री गुरु नानक जी की 556वीं जयंती के पावन पर्व पर बुधवार को गांधीनगर जिले के पोर गांव में स्थित गुरुद्वारे में सिख परिवारों की ओर से आयोजित सत्संग, कीर्तन और पूजा में भावपूर्वक भाग लिया।

मुख्यमंत्री ने गुरुद्वारा में गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन किए और पूजा-अर्चना कर राज्य के सभी नागरिकों की सुख-समृद्धि, शांति और विकास के लिए अरदार की।

इस अवसर पर गुरुद्वारा के मुख्य सेवक गुरुप्रीत सिंह ढिल्लों तथा परमजीत कौर छाबड़ा ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल को अंग वस्त्र और स्वर्ण मंदिर की प्रतिकृति भेंट कर स्वागत किया।

मुख्यमंत्री और महानुभावों ने गुरुद्वारा में इस शुभ अवसर पर आयोजित लंगर में प्रसाद वितरण की सेवा भी की।

ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल, महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल और श्री अल्पेश ठाकोर भी गुरुद्वारा में दर्शनार्थ मौजूद रहे।

पोरबंदर–सिकंदराबाद एक्सप्रेस ट्रेन को लिंगमपल्ली स्टेशन पर अस्थायी ठहराव की सुविधा

(जीएनएस)। त्योहारों के दौरान यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तथा भीड़ प्रबंधन के उद्देश्य से रेल प्रशासन द्वारा लिंगमपल्ली (LPI) स्टेशन पर कुछ ट्रेनों का अस्थायी ठहराव प्रदान किया गया है। यह सुविधा आगामी 06 माह की अवधि के लिए, तत्काल प्रभाव से 30 अप्रैल, 2026 तक लागू रहेगी।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इस अवधि में निम्नलिखित ट्रेनें लिंगमपल्ली स्टेशन पर अस्थायी रूप से ठहरेंगी –

1.ट्रेन संख्या 20967 सिकंदराबाद–पोरबंदर एक्सप्रेस
लिंगमपल्ली स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान समय – 15.39/15.40 बजे

2.ट्रेन संख्या 20968 पोरबंदर–सिकंदराबाद एक्सप्रेस
लिंगमपल्ली स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान समय – 06.14/06.15 बजे

यह अस्थायी ठहराव यात्रियों की सुविधा के दृष्टिगत किया गया है, जिससे क्रिसमस, नववर्ष एवं संक्रांति पर्वों के दौरान बढ़ने वाली भीड़ का प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके। इस निर्णय से यात्रियों को लिंगमपल्ली स्टेशन से यात्रा करने में सुगमता एवं सुविधा प्राप्त होगी।

19 नवंबर को पोरबंदर से चलने वाली पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट ट्रेन सांतरागाछी जं. स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी

(जीएनएस)। रेलवे प्रशासन द्वारा शालीमार स्टेशन पर यार्ड रिमॉडलिंग से संबंधित इंजीनियरिंग कार्य किए जाने के कारण पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल से चलने वाली पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट ट्रेन को सांतरागाछी जं. स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट एवं शॉर्ट ओरिजिनेट किया जाएगा।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि —

19 नवंबर, 2025 को पोरबंदर से चलनवे वाली ट्रेन संख्या 12905 पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट की यात्रा सांतरागाछी जं. स्टेशन पर ही समाप्त होगी।

इसी प्रकार, 21 नवंबर, 2025 को शालीमार से चलने वाली ट्रेन संख्या 12906 शालीमार-पोरबंदर सुपरफास्ट की यात्रा सांतरागाछी जं. स्टेशन से ही प्रारंभ होगी। भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे उक्त तिथियों में अपनी यात्रा से पूर्व गाड़ियों की स्थिति एवं समय संबंधी नवीनतम जानकारी के लिए NTES ऐप अथवा भारतीय रेल की आधिकारिक वेबसाइट से जानकारी प्राप्त करें। आरक्षित यात्रियों को इस परिवर्तन की सूचना SMS अलर्ट के माध्यम से प्रदान की जाती है। रेलवे प्रशासन यात्रियों से सहयोग की अपील करता है एवं किसी भी असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है।

रेलवे के पेंशनर / पारिवारिक पेंशनर 30 नवम्बर 2025 तक जीवन प्रमाणपत्र अनिवार्य रूप से जमा कराएं

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक श्री मोहित पंचाल ने जानकारी दी है कि रेलवे के सभी पेंशनरों एवं पारिवारिक पेंशनरों को अपना जीवन प्रमाणपत्र (Life Certificate) दिनांक 30 नवम्बर 2025 तक अनिवार्य रूप से जमा कराना आवश्यक है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि पेंशनरों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तथा बैंकों में लंबी कतारों और वृद्ध पेंशनरों को होने वाली असुविधा से बचाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा "जीवन

प्रमाण (Jeevan Pramaan)" नामक एक डिजिटल एप्लिकेशन विकसित किया गया है। इस एप्लिकेशन के माध्यम से पेंशनर अपने घर बैठे ही डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र जमा कर सकते हैं तथा प्रमाणपत्र की प्रति ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं।

यदि किसी पेंशनर को डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र जमा करने में किसी प्रकार की कठिनाई आती है, तो वे सहायता हेतु भावनगर परा स्थित मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के लेखा विभाग से संपर्क कर सकते हैं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने सभी पेंशनरों एवं पारिवारिक पेंशनरों से अनुरोध किया है कि वे अपना जीवन प्रमाणपत्र निर्धारित तिथि तक जमा कराएं, ताकि पेंशन भुगतान में कोई बाधा न आए।

किसानों के हित में गुजरात सरकार का महत्वपूर्ण निर्णय

- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात में 9 नवंबर से शुरू होगी मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन की समर्थन मूल्य पर खरीद : कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी
- किसानों से समर्थन मूल्य पर लगभग 15,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन की खरीदी की जाएगी
- राज्य में मूंगफली के बंपर उत्पादन को ध्यान में रखकर प्रति किसान 125 मन मूंगफली की खरीदी करने का उदारतम निर्णय

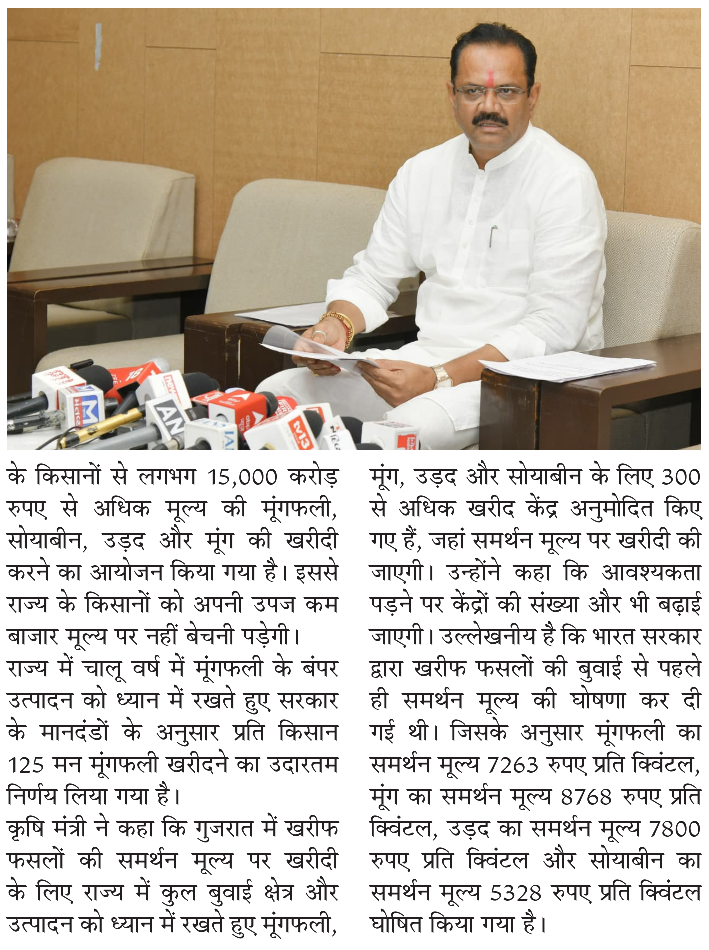

(जीएनएस)। गांधीनगर : कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने बुधवार को गांधीनगर में गुजरात सरकार द्वारा किसानों के हित में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय के बारे में मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि राज्य के किसानों को उनकी उपज के लाभकारी मूल्य के साथ-साथ आर्थिक सुरक्षा भी मिल सके, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात में आगामी 9 नवंबर से समर्थन मूल्य पर मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन जैसी खरीफ फसलों की खरीद शुरू करने का निर्णय किया गया है।

कृषि मंत्री ने इस संदर्भ में कहा कि देश के किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में चालू वर्ष में समर्थन मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि करने का निर्णय किया गया है। गत वर्ष की तुलना में चालू वर्ष में मूंगफली के मूल्य में प्रति क्विंटल 480 रुपए, उड़द के मूल्य में 400 रुपए और सोयाबीन के मूल्य में प्रति क्विंटल 436 रुपए की वृद्धि की गई है। मूल्य में बढ़ोतरी के साथ-साथ लाभकारी मूल्य मिलने से किसानों को इसका अधिकतम लाभ मिलेगा।

श्री वाघाणी ने कहा कि राज्य में प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के तहत चालू सीजन में राज्य के किसानों से लगभग 15,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की मूंगफली, सोयाबीन, उड़द और मूंग की खरीदी करने का आयोजन किया गया है। इससे राज्य के किसानों को अपनी उपज कम बाजार मूल्य पर नहीं बेचनी पड़ेगी।

राज्य में चालू वर्ष में मूंगफली के बंपर उत्पादन को ध्यान में रखते हुए सरकार के मानदंडों के अनुसार प्रति किसान 125 मन मूंगफली खरीदने का उदारतम निर्णय लिया गया है।

कृषि मंत्री ने कहा कि गुजरात में खरीफ फसलों की समर्थन मूल्य पर खरीदी के लिए राज्य में कुल बुवाई क्षेत्र और उत्पादन को ध्यान में रखते हुए मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन के लिए 300 से अधिक खरीद केंद्र अनुमोदित किए गए हैं, जहां समर्थन मूल्य पर खरीदी की जाएगी। उन्होंने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर केंद्रों की संख्या और भी बढ़ाई जाएगी। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार द्वारा खरीफ फसलों की बुवाई से पहले ही समर्थन मूल्य की घोषणा कर दी गई थी। जिसके अनुसार मूंगफली का समर्थन मूल्य 7263 रुपए प्रति क्विंटल, मूंग का समर्थन मूल्य 8768 रुपए प्रति क्विंटल, उड़द का समर्थन मूल्य 7800 रुपए प्रति क्विंटल और सोयाबीन का समर्थन मूल्य 5328 रुपए प्रति क्विंटल घोषित किया गया है।

गिरनार परिक्रमा पर रोक की वजह से वेरावल-गांधीग्राम स्पेशल ट्रेन निरस्त

(जीएनएस)। जूनागढ़ में लगने वाले परिक्रमा मेले पर स्थानीय प्रशासन द्वारा रोक लगाए जाने के कारण पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर मंडल के वेरावल-गांधीग्राम के बीच चलने वाली वेरावल-गांधीग्राम स्पेशल ट्रेन को निरस्त कर दिया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की इस स्पेशल ट्रेन की सेवाएं 11 नवंबर, 2025 तक उपलब्ध होनी थी, परन्तु अब इस सुविधा को तत्काल प्रभाव से (05 नवंबर, 2025 से) निरस्त करने का निर्णय लिया गया है।

निरस्त की जाने वाली ट्रेनेः

1. ट्रेन संख्या 09226 (वेरावल-गांधीग्राम)
2. ट्रेन संख्या 09225 (गांधीग्राम-वेरावल)

यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा की योजना बनाते समय उक्त परिवर्तनों पर ध्यान दें। असुविधा के लिए रेलवे प्रशासन खेद व्यक्त करता है।

डेयरी और MSME के हितों के लिए भारत प्रतिबद्धः पीयूष गोयल

(जीएनएस)। वेलिंगटन। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को कहा कि भारत अपने सभी मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) में डेयरी, कृषि और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के हितों की रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। न्यूजीलैंड की चार दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर पहुंचे गोयल ने यह बात ऑकलैंड में आयोजित भारत-न्यूजीलैंड व्यापार मंच को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते पर चौथे दौर की बातचीत में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। दोनों देशों ने इस बात पर सहमति जताई है कि वार्ता के दौरान एक-दूसरे की संवेदनशीलताओं और घरेलू आर्थिक संरचना का पूरा सम्मान किया जाएगा। गोयल ने कहा कि आने वाले चरणों में यह वार्ता और तेज़ी से आगे बढ़ेगी, जिससे दोनों देशों के व्यापारिक रिश्तों को नई दिशा मिलेगी। वाणिज्य मंत्री ने साफ कहा कि भारत ने अब तक किसी भी एफटीए में डेयरी या कृषि क्षेत्र में किसी देश को शुल्क रियायत नहीं दी है। उन्होंने कहा कि किसानों और एमएसएमई क्षेत्र के हित भारत के लिए सर्वोपरि हैं और इन पर किसी भी तरह का समझौता नहीं किया जाएगा। गोयल ने कहा, "हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि वैश्विक व्यापार में भागीदारी बढ़ाने के साथ-साथ हमारे स्थानीय उद्योग, किसान और उद्यमी सुरक्षित रहें और उन्हें प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिले।" उन्होंने न्यूजीलैंड के वाणिज्य मंत्री टॉड मैक्ले के साथ हुई अपनी वार्ता को "बेहद सकारात्मक और रचनात्मक" बताते हुए कहा कि यह संवाद दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक साझेदारी की मजबूत नींव रखेगा। गोयल ने कहा कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच न केवल व्यापारिक, बल्कि तकनीकी और निवेश संबंधों को भी गहराई देने पर जोर दिया जा रहा है।

भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता के बारे में पूछे जाने पर गोयल ने कहा कि दोनों देशों के बीच रचनात्मक बातचीत लगातार जारी है। उन्होंने बताया कि कई जटिल विषयों पर ठोस प्रगति हुई है और दिशा सकारात्मक है। गोयल ने कहा, "भारत के वैश्विक व्यापार संबंधों का मकसद किसी देश के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करना नहीं, बल्कि पारस्परिक लाभ और स्थायी विकास को सुनिश्चित करना है।"

उन्होंने यह भी बताया कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच कृषि, रक्षा, शिक्षा, अंतरिक्ष, पर्यटन, डेयरी मशीनरी और कृषि प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में सहयोग की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि एक मजबूत भारत-न्यूजीलैंड एफटीए से दोनों देशों के उद्योगों, किसानों और नागरिकों के लिए नए अवसर पैदा होंगे।

ऑकलैंड में आयोजित भारतीय समुदाय के एक विशेष कार्यक्रम में पीयूष गोयल ने न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन और वाणिज्य मंत्री टॉड मैक्ले के साथ मंच साझा किया। इस दौरान गोयल ने दोनों नेताओं को गले लगाकर भारत-न्यूजीलैंड की बढ़ती मित्रता और पारस्परिक सम्मान का संदेश दिया। उन्होंने प्रवासी भारतीय समुदाय की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय मूल के लोग दुनिया में भारत की संस्कृति, मूल्य और उद्यमशीलता का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार दुनिया भर में बसे भारतीयों की भावनात्मक, सांस्कृतिक और आर्थिक साझेदारी को और सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

पश्चिम रेलवे के स्थापना दिवस पर रंग बिरंगी रोशनी से सजे वडोदरा मंडल के स्टेशन भवन

(जीएनएस)। 2025 को पश्चिम रेलवे ने अपना 75वां स्थापना दिवस मनाया। अपनी शुरुआत के बाद से पश्चिम रेलवे ने राष्ट्र की सेवा में अपनी 70 से अधिक वर्षों की यात्रा में कई मील के पत्थर हासिल किए हैं। इस अवसर पर वडोदरा मंडल के प्रधान कार्यालय सहित मंडल की सभी प्रमुख स्टेशन बिल्डिंगों वडोदरा, एकतानगर, प्रतापनगर, मकरपुरा, डभोई आदि स्टेशनो को रंग बिरंगी रोशनी से सजाया गया। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार बॉम्बे, बड़ौदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे कंपनी (बीबी एंड सीआई) का गठन 1855 में किया गया था, जिसकी शुरुआत गुजरात राज्य में पश्चिमी तट पर अंकलेश्वर से उत्राण तक 29 मील ब्रॉड गेज ट्रैक के निर्माण के साथ हुई थी एवं इसका मुख्यालय सूरत में था। उसी वर्ष 21 नवम्बर, 1855 को कंपनी ने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ सूरत से बड़ौदा

और अहमदाबाद तक एक रेलवे लाइन बनाने के लिए एक समझौता किया। इस के साथ ही पश्चिमी बंदरगाह में गुजरात में पैदा की जाने वाली कपास की भरपूर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उत्राण (सूरत के उत्तर) से तत्कालीन बॉम्बे तक एक लाइन शुरू करने के लिए एक और अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसके अगले वर्ष लाइन पर काम शुरू हुआ और उत्राण से बॉम्बे में ग्रांट रोड स्टेशन तक की लाइन को आधिकारिक तौर पर 28 नवम्बर, 1864 को खोला गया जिसके द्वारा मुंबई में पश्चिमी लाइन की शुरुआत हुई।

श्री सक्सेना ने आगे बताया कि अपने वर्तमान स्वरूप में पश्चिम रेलवे 5 नवम्बर, 1951 को अपनी अग्रदूत, तत्कालीन बॉम्बे, बड़ौदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे कंपनी (बीबी और सीआई) के अन्य स्टेट रेलवे जैसे सौराष्ट्र, राजपुताना और जयपुर के साथ विलय से अस्तित्व में आयी। 1850 के दशक में ब्रिटिश काल में अपने जन्म के बाद से पश्चिम रेलवे ने अपनी लंबी यात्रा में बार-बार अपनी श्रेष्ठता साबित की है।

महेसाणा स्टेशन का पुनर्विकास कार्य तेजी से प्रगति पर, यात्रियों को मिलेगी अत्याधुनिक सुविधाएँ और बेहतर यात्रा अनुभव

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर महेसाणा रेलवे स्टेशन का अमृत भारत स्टेशन योजना (ABSS) के तहत पुनर्विकास तेजी से किया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य स्टेशन को न केवल यात्रियों के लिए विश्वस्तरीय सुविधाओं से सुसज्जित करना है, बल्कि इसे शहर के विकास, कनेक्टिविटी और आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र भी बनाना है। पुनर्विकास के बाद मेहसाणा स्टेशन एक मल्टीमॉडल ट्रांजिट हब के रूप में उभरेगा, जहाँ आधुनिकता, सुविधा और सौंदर्य का सुंदर संगम दिखाई देगा।

नया स्टेशन भवन (पूर्व दिशा) – निर्माणाधीन

- महेसाणा स्टेशन के पूर्व दिशा में स्थित नए स्टेशन भवन का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा है। भवन के फसाड का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है, जिससे स्टेशन का बाहरी दृश्य अधिक आधुनिक और आकर्षक लगेगा।
- सर्कुलेटिंग एरिया पोर्च, वेटिंग रूम, बुकिंग ऑफिस, टिकट चेकिंग स्टाफ ऑफिस, पूछताछ कार्यालय और वाहन संचालन हेतु सुचारु व्यवस्थाएँ शामिल होंगी।
- अधिकारियों के लिए विश्रामगृह, 03 रिटायरिंग रूम, डॉर्मिटरी, सीसीटीवी निगरानी प्रणाली, और स्वच्छ शौचालयों की व्यवस्था भी की जा रही है ताकि यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों दोनों को सुविधा मिल सके।

प्रमुख कार्य एवं प्रगति की स्थिति

- मुख्य प्रवेश द्वार पर टू-व्हीलर और फोर-व्हीलर पार्किंग का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।
- दूसरे प्रवेश द्वार के स्टेशन भवन में बुकिंग ऑफिस तथा एसी/नॉन-एसी वेटिंग हॉल का कार्य प्रगति पर है।
- यात्रियों की सुरक्षित आवाजाही के लिए 40 फीट चौड़ा रूफ प्लाज़ा बनाया जा रहा है, जो स्टेशन के दोनों ओर सुगम कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। यह रानी कमलापती स्टेशन पर बनाए गए रूफ प्लाज़ा के अनुभव के आधार पर बनाया जा रहा है।
- प्लेटफॉर्म 4 एवं 5 पर शेल्टर निर्माण का कार्य पूरा हो चुका है, और इन्हें दिव्यांगजन-अनुकूल बनाया गया है।

आधुनिक यात्री सुविधाएँ

- महेसाणा स्टेशन के पुनर्विकास के बाद यात्रियों को अनेक सुविधाजनक एवं अत्याधुनिक सुविधाएँ प्राप्त होंगी।
- कुल 08 प्लेटफॉर्म और 12 रेल लाइनें, जिनमें से 02 डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (DFC) के लिए आरक्षित हैं।
- स्टेशन पर 02 फुट ओवर ब्रिज और 04 लिफ्ट्स का निर्माण किया जा रहा हैं।
- यात्रियों के आराम हेतु एसी, नॉन-एसी और महिला प्रतीक्षालय बनाए जा रहे हैं।
- प्रत्येक प्लेटफॉर्म पर 28-28 स्टेनलेस स्टील बेंच लगाई जा रही हैं, साथ ही कोच गाइडेंस सिस्टम प्लेटफॉर्म नं. 1, 4/5 और 6/7 पर लगाए जा रहे है।
- यात्रियों की सुविधा के लिए फूड प्लाज़ा, वन स्टेशन वन प्रोडक्ट स्टॉल, जन औषधि केंद्र, एटीएम, एटीवीएम, लगेज ट्रॉली तथा व्हीलचेयर की व्यवस्था की जा रही है।
- स्टेशन परिसर में हाइ-रिज़ॉल्यूशन सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं ताकि सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।
- डॉर्मिटरी, रिटायरिंग रूम, बुकिंग ऑफिस और पूछताछ केंद्र का आधुनिकीकरण किया गया है।
- यात्रियों को एक अनोखा अनुभव प्रदान करने के लिए "रेस्टोरेंट ऑन व्हील्स" की स्थापना की योजना भी प्रस्तावित है।

ट्रेनों का संचालन एवं यातायात

- महेसाणा स्टेशन पश्चिम रेलवे का एक प्रमुख स्टेशन है जहाँ—
- प्रतिदिन 38 सुपरफास्ट, 23 मेल/एक्सप्रेस तथा 10 लोकल ट्रेनें रुकती हैं।
- 06 ट्रेनें मेहसाणा से आरंभ होती हैं।
- प्रतिदिन लगभग 12,000 यात्री इस स्टेशन से यात्रा करते हैं।

यात्रियों एवं क्षेत्र के लिए लाभ

महेसाणा स्टेशन के पुनर्विकास से यात्रियों को सुरक्षित, स्वच्छ और आधुनिक यात्रा अनुभव प्राप्त होगा। स्टेशन परिसर में विकसित की जा रही नई सुविधाएँ स्थानीय व्यापार, पर्यटन और रोजगार को भी बढ़ावा देंगी। इस परियोजना से शहर और आसपास के क्षेत्रों को बेहतर रेल कनेक्टिविटी प्राप्त होगी, जिससे क्षेत्रीय विकास को नई गति मिलेगी। महेसाणा स्टेशन का यह कायाकल्प स्थानीय निवासियों के लिए आर्थिक प्रगति, सुविधा और गर्व का नया अध्याय सिद्ध होगा, जो "नए भारत के आधुनिक रेलवे स्टेशन" की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

BLACK WEDNESDAY: हादसों में आठ श्रद्धालुओं समेत 16 की मौत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। बुधवार का दिन उत्तर प्रदेश के लिए "ब्लैक वेडनसडे" साबित हुआ। बीते 24 घंटे के भीतर अलग-अलग हादसों में 16 लोगों ने अपनी जान गंवा दी। इन दुखद घटनाओं में मीरजापुर में आठ श्रद्धालु ट्रेन की चपेट में आ गए, बहराइच में सड़क दुर्घटना में एक ही परिवार के चार लोग काल के गाल में समा गए, जबकि जौनपुर और प्रतापगढ़ में हुए हादसों में चार अन्य लोगों की मौत हुई। पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश में मातम का माहौल है।

चुनार स्टेशन पर दर्दनाक रेल हादसा: आठ श्रद्धालु मरे, कई घायल

मीरजापुर जिले के चुनार रेलवे स्टेशन पर बुधवार सुबह हृदयविदारक रेल हादसा हुआ। नेताजी एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आने से आठ श्रद्धालुओं की मौके पर ही मौत हो गई, जिनमें छह महिलाएं शामिल हैं। घटना सुबह करीब 9:30 बजे हुई, जब कार्तिक पूर्णिमा स्नान के लिए जा रहे श्रद्धालु चोपन पैसेंजर से उतरने के बाद प्लेटफॉर्म की जगह सीधे ट्रैक से नीचे उतरने लगे। तभी तेज रफ्तार नेताजी एक्सप्रेस ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसा इतना भयावह था कि किसी को संभलने का मौका ही नहीं मिला। मौके पर चारों ओर शवों के टुकड़े बिखर गए। पुलिस ने बड़ी मशक्कत से शवों को समेटकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। मृतकों की पहचान सोनभद्र जिले के विभिन्न गांवों के रूप में हुई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए अधिकारियों को घायलों के समुचित उपचार का निर्देश दिया है।

बहराइच में ट्रेलर की चपेट में आया परिवार, चार की मौत

बहराइच जिले में बुधवार सुबह लखनऊ-बहराइच राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित मदन कोठी चौराहे पर गिट्टी से भरा ट्रेलर अनियंत्रित होकर पलट गया। उसी वक्त एक बाइक सवार परिवार ट्रेलर की चपेट में आ गया। हादसे में दो पुरुष, एक महिला और एक साल के बच्चे की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा और फरार ट्रेलर चालक की तलाश शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री ने घटना पर शोक जताते हुए परिजनों को हरसंभव सहायता का आश्वासन दिया।

जौनपुर में ट्रक और डीसीएम की टक्कर में दो की मौत

जौनपुर जिले में वाराणसी-लखनऊ राजमार्ग पर मंगलवार देर रात महरुपुर गांव के पास ट्रक और डीसीएम में जबरदस्त भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि डीसीएम चालक राम अचल (36) और ट्रक का खलासी

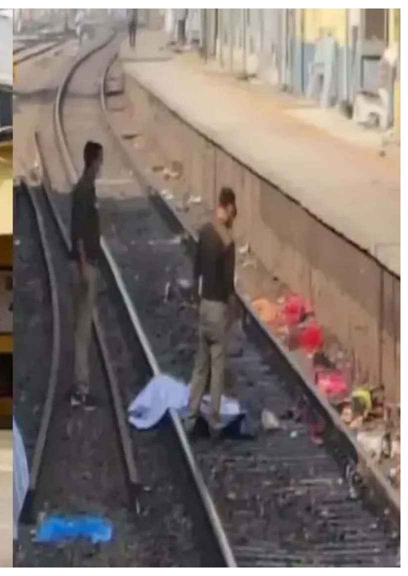

जहूर अहमद मलिक की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने रातभर राहत और बचाव कार्य चलाकर जाम खुलवाया और शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। बताया गया कि डीसीएम चालक को झपकी आने से वाहन अनियंत्रित होकर दूसरी लेन में घुस गया था।

प्रतापगढ़ में हादसे ने छीने दो सगे भाइयों की जिंदगी

प्रतापगढ़ जिले में मंगलवार देर रात कोतवाली देहात थाना क्षेत्र में प्रयागराज-अयोध्या राष्ट्रीय राजमार्ग पर मोटरसाइकिल सवार दो सगे भाइयों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान नरहर पट्टी गांव निवासी महेंद्र कुमार विश्वकर्मा (35) और मिथिलेश विश्वकर्मा (22) के रूप में हुई। दोनों भाई सोलर पैनल लगाने का काम करते थे और काम खत्म कर घर लौट रहे थे, तभी एक अज्ञात चारपहिया वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। पुलिस ने अज्ञात चालक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

प्रदेश में पसरा मातम, प्रशासन सतर्क

लगातार हो रहे इन हादसों से पूर्वी उत्तर प्रदेश में शोक की लहर दौड़ गई है। रेलवे और परिवहन विभाग को घटना की जांच के आदेश दिए गए हैं। मीरजापुर और बहराइच हादसे में मृतकों के परिजनों को आर्थिक सहायता देने की तैयारी की जा रही है। अधिकारियों को दुर्घटनास्थलों पर जाकर राहत कार्यों की निगरानी के निर्देश दिए गए हैं। बुधवार का यह दिन पूरे प्रदेश के लिए काला दिन साबित हुआ — जहां कुछ ही घंटों में 16 परिवारों की खुशियाँ मातम में बदल गईं।

भारत के आंतरिक मामलों पर टिप्पणी करने का अधिकार नहीं, केंद्रीय मंत्री ने पाक को लताड़ा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत ने एक बार फिर पाकिस्तान को कड़ा संदेश देते हुए साफ कर दिया है कि उसे भारत के आंतरिक मामलों पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया ने बुधवार को कतर की राजधानी दोहा में आयोजित दूसरे विश्व सामाजिक विकास शिखर सम्मेलन में पाकिस्तान को फटकार लगाते हुए कहा कि उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों का दुरुपयोग बंद कर देना चाहिए और पहले अपने देश की स्थिति पर आत्मचिंतन करना चाहिए।

मांडविया ने कहा कि पाकिस्तान की आदत बन चुकी है कि वह भारत के खिलाफ झूठा प्रचार करता रहे और वैश्विक मंचों का इस्तेमाल भारत की छवि को धूमिल करने के लिए करे। उन्होंने कहा, "भारत के खिलाफ यह दुष्प्रचार अंतरराष्ट्रीय मंच का घोर दुरुपयोग है, जिससे सामाजिक विकास जैसे गंभीर विषयों से ध्यान भटकता है। भारत सच्चाई सामने लाना चाहता है कि वह विकास, सहयोग और मानवता के हित में काम कर रहा है, जबकि पाकिस्तान आतंक और अस्थिरता फैलाने में लगा है।"

उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा भारत को लेकर की गई अनुचित और भड़काऊ टिप्पणियों पर भी तीखी प्रतिक्रिया दी और कहा कि ऐसे बयानों से पाकिस्तान की मानसिकता और उसकी हताशा झलकती है। मांडविया ने कहा कि पाकिस्तान लगातार सीमा पार आतंकवाद और शत्रुता को बढ़ावा देकर न केवल क्षेत्रीय शांति को प्रभावित कर रहा है, बल्कि सिंधु जल संधि जैसी महत्वपूर्ण समझौतों की भावना को भी कमजोर कर रहा है।

सिंधु जल संधि पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि पाकिस्तान बार-बार इस संधि के तंत्र का दुरुपयोग करता आया है ताकि भारत की वैध परियोजनाओं में बाधा डाली जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि भारत हमेशा अंतरराष्ट्रीय दायित्वों का पालन करता है, लेकिन पाकिस्तान ने इन समझौतों की भावना को नुकसान पहुंचाया है।

जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर मांडविया ने भारत का दृढ़ रुख दोहराया और कहा कि पाकिस्तान को यह समझ लेना चाहिए कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और इस पर टिप्पणी करना उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर है। उन्होंने कहा, "यह विडंबना है कि एक ऐसा देश जो खुद अपने नागरिकों के प्रति अन्याय कर रहा है और आतंकवाद को पनाह दे रहा है, वह भारत को उपदेश देने की कोशिश करता है।"

मांडविया ने पाकिस्तान को सलाह दी कि वह अपनी ऊर्जा भारत के खिलाफ झूठ फैलाने में न लगाकर अपने देश की आंतरिक चुनौतियों को सुलझाने में लगाए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था अंतरराष्ट्रीय सहायता पर निर्भर हो चुकी है, और अब वक्त आ गया है कि वह आत्मनिर्भरता और स्थिरता के रास्ते पर लौटे। भारत के विकास की दिशा में बात करते हुए मांडविया ने दुनिया के सामने भारत की प्रगति और सामाजिक सुधारों की मिसाल रखी। उन्होंने कहा, "पिछले दस वर्षों में भारत ने समावेशी विकास का जो मॉडल अपनाया है, उससे लगभग 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। देश के 11.8 करोड़ स्कूली बच्चों को पौष्टिक मध्याह्न भोजन मिल रहा है, 80 करोड़ नागरिकों को खाद्य सुरक्षा प्रदान की गई है, 42.5 करोड़ लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा और 3.7 करोड़ गरीब परिवारों को घर उपलब्ध कराए गए हैं।"

उन्होंने आगे बताया कि भारत की बेरोजगारी दर 2017-18 के छह प्रतिशत से घटकर अब 3.2 प्रतिशत रह गई है, जबकि महिलाओं की रोजगार दर लगभग दोगुनी हो चुकी है। उन्होंने यह भी कहा कि 2015 में भारत का सामाजिक सुरक्षा कवरेज जहां केवल 19 प्रतिशत था, वहीं अब यह बढ़कर 64.3 प्रतिशत हो गया है।

वर्जीनिया में इतिहास रचने वाली ग़ज़ाला हाशमी: पहली भारतीय-अमेरिकी और मुस्लिम उप-राज्यपाल बनीं

(जीएनएस)। वाशिंगटन। अमेरिका के वर्जीनिया राज्य में भारतीय मूल की डेमोक्रेट नेता ग़ज़ाला हाशमी ने एक नया इतिहास रच दिया है। उन्होंने मंगलवार को हुए चुनाव में रिपब्लिकन उम्मीदवार जॉन रीड को हराकर लेफ्टिनेंट गवर्नर का पद जीत लिया। इसी के साथ वह वर्जीनिया की पहली भारतीय-अमेरिकी और पहली मुस्लिम महिला उप-राज्यपाल बन गई हैं।

ग़ज़ाला हाशमी ने इस पद के लिए जून में हुए डेमोक्रेटिक प्राइमरी में कठिन प्रतिस्पर्धा के बाद नामांकन हासिल किया था। वह पेशे से शिक्षाविद रही हैं और लंबे समय तक शिक्षा जगत से जुड़ी रही हैं। लेफ्टिनेंट गवर्नर के रूप में अब वे वर्जीनिया राज्य सीनेट की अध्यक्षता करेंगी। वर्तमान में सीनेट में डेमोक्रेट्स को 21-19 के मामूली बहुमत का लाभ है, ऐसे में किसी भी मुद्दे पर टाई की स्थिति में हाशमी का वोट निर्णायक साबित होगा।

उनकी इस जीत के बाद उनकी मौजूदा सीनेट सीट खाली हो जाएगी, जिसे अब एक विशेष चुनाव के ज़रिए भरा जाएगा। इसी चुनावी दौर में एक अन्य मुकाबले में पूर्व सांसद एबिगेल स्पैनबर्गर ने भी बड़ा उलटफेर करते हुए मौजूदा लेफ्टिनेंट गवर्नर विन्सोम अर्ल-सीअर्स को हराया। रिपब्लिकन उम्मीदवार को न तो पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का समर्थन मिला, न ही वह धन जुटाने के मामले में स्पैनबर्गर से मुकाबला कर पाईं।

ग़ज़ाला हाशमी का जन्म भारत के हैदराबाद में हुआ था। वे महज़ चार वर्ष की उम्र में अपने परिवार के साथ अमेरिका चली गई थीं। उन्होंने अमेरिकी साहित्य में पीएचडी की है और यूनिवर्सिटी ऑफ़ रिचमंड सहित कई प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में अध्यापन किया है। साल 2019 में उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और रिपब्लिकन उम्मीदवार ग्लेन स्टरटेवन्ट को हराकर पहली बार वर्जीनिया सीनेट में पहुंचीं।

सीनेट में रहते हुए हाशमी ने महिलाओं के अधिकार, सामाजिक न्याय और शिक्षा सुधार जैसे मुद्दों पर लगातार काम किया। उन्होंने महिलाओं के प्रजनन अधिकारों और गर्भनिरोधक साधनों की सुलभता को लेकर एक अहम विधेयक भी पेश किया था, हालांकि राज्यपाल ग्लेन यंगकिन ने बाद में इस विधेयक को वीटो कर दिया।

अपनी जीत के बाद ग़ज़ाला हाशमी ने कहा, "यह जीत सिर्फ मेरे लिए नहीं, बल्कि उन तमाम महिलाओं, प्रवासियों और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए है जो अमेरिका को और समावेशी बनाना चाहते हैं। मैंने शिक्षा से शुरुआत की थी और अब जनता की सेवा के नए अध्याय की ओर बढ़ रही हूँ।"

हाशमी की ऐतिहासिक जीत न केवल भारतीय-अमेरिकी समुदाय के लिए गर्व का क्षण है बल्कि अमेरिका में विविधता और प्रतिनिधित्व की दिशा में एक और मील का पत्थर मानी जा रही है।

PM मोदी ने महिला विश्व कप विजेता टीम से की मुलाकात, ट्रोलिंग के बाद शानदार वापसी पर की सराहना

(जीएनएस)। नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को विश्व कप जीतकर इतिहास रचने वाली भारतीय महिला क्रिकेट टीम से अपने निवास पर मुलाकात की। उन्होंने टीम की दृढ़ता, आत्मविश्वास और कठिन समय के बाद शानदार वापसी की जमकर सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि हार की परिस्थितियों में भी जीत का जज़्बा बनाए रखना ही असली खेल भावना है।

भारत ने रविवार को नवी मुंबई में खेले गए फाइनल मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से हराकर पहली बार आईसीसी महिला विश्व कप खिताब जीता था। यह जीत न सिर्फ भारतीय क्रिकेट के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो गई बल्कि देशभर में महिला सशक्तिकरण की एक नई मिसाल भी बनी।

प्रधानमंत्री मोदी ने खिलाड़ियों से बातचीत के दौरान कहा कि जब टीम को लगातार तीन हार का सामना करना पड़ा, तब पूरे देश को उम्मीद थी कि यह टीम हिम्मत नहीं हारेगी — और आपने वही कर दिखाया। उन्होंने कहा, "आपने यह साबित किया कि असफलता अंत नहीं होती, बल्कि एक नई शुरुआत का अवसर होती है।"

टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने इस मौके पर 2017 की उस मुलाकात को याद किया जब टीम विश्व कप जीतने के करीब पहुंचकर भी ट्रॉफी से चूक गई थी। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "2017 में हम ट्रॉफी के बिना प्रधानमंत्री जी से मिले थे, लेकिन आज हम ट्रॉफी के साथ आए हैं। उम्मीद है, आगे भी इस तरह की मुलाकातें होती रहेंगी।"

उपकप्तान स्मृति मंधाना ने प्रधानमंत्री की बातों से प्रभावित होकर कहा, "प्रधानमंत्री जी ने हमें यह एहसास दिलाया कि देश हमारे साथ खड़ा है। यह मुलाकात हमें आगे के टूर्नामेंट्स में और बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करेगी।" मुलाकात के दौरान पीएम मोदी ने टीम के हर खिलाड़ी से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की और उनके योगदान के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि इस जीत ने भारत की बेटियों को नई ऊर्जा और आत्मविश्वास दिया है। प्रधानमंत्री ने खिलाड़ियों के परिवारों, कोचिंग स्टाफ और सहयोगी दल को भी बधाई दी। टीम के इस गौरवशाली पल पर खेल मंत्री, बीसीसीआई के अधिकारी और कई पूर्व क्रिकेटरों ने भी बधाई संदेश दिए हैं। देशभर में जगह-जगह महिलाओं की इस ऐतिहासिक जीत का जश्न मनाया जा रहा है।

42 साल में रचा इतिहास: पहली एक करोड़ कार बेचने में लगे 28 साल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी और भरोसेमंद कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड (MSIL) ने एक ऐतिहासिक मुकाम हासिल किया है। कंपनी ने बुधवार को घोषणा की कि उसने भारत के घरेलू बाजार में अपनी तीन करोड़वीं पैसेंजर कार की बिक्री कर ली है। इस उपलब्धि के साथ मारुति सुजुकी भारत की पहली ऐसी ऑटोमोबाइल कंपनी बन गई है, जिसने घरेलू स्तर पर यह ऐतिहासिक आंकड़ा छुआ है।

मारुति सुजुकी की यह यात्रा किसी प्रेरक गाथा से कम नहीं। 14 दिसंबर 1983 को कंपनी ने अपनी पहली कार 'मारुति 800' भारतीय ग्राहक को सौंपी थी, जिसने देश में मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए चारपहिया वाहन का सपना साकार किया। उस दौर की यह छोटी सी कार भारत के औद्योगिक इतिहास की बड़ी छलांग थी।

कंपनी के मुताबिक, मारुति को पहली एक करोड़ कारें बेचने में 28 साल 2 महीने का लंबा वक्त लगा। लेकिन इसके बाद भारत के बढ़ते उपभोक्ता वर्ग और कंपनी के लगातार नवाचारों ने उसकी रफ्तार को कई गुना बढ़ा दिया। दूसरी एक करोड़ कारें कंपनी ने मात्र 7 साल 5 महीने में और तीसरी एक करोड़ कारें सिर्फ 6 साल 4 महीने में बेच डालीं। यह आंकड़ा इस बात का प्रमाण है कि भारत में मारुति की पकड़ आज भी उतनी ही मजबूत है जितनी चार दशक पहले थी।

मारुति के सबसे लोकप्रिय मॉडलों में आल्टो ने हमेशा पहला स्थान बनाए रखा है। अब तक इस मॉडल की 47 लाख यूनिट्स बेची जा चुकी हैं। वैगन आर (34 लाख) और स्विफ्ट (32 लाख) भी लोगों की पहली पसंद बनी हुई हैं। वहीं, नए दौर की ब्रेजा और फ्रोंक्स जैसी कॉम्पैक्ट एसयूवी ने भी कंपनी की बिक्री में उल्लेखनीय योगदान दिया है। मारुति सुजुकी के प्रबंध निदेशक और सीईओ हिसाशी ताकेउची ने इस ऐतिहासिक मौके पर कहा, "भारत में हर हजार व्यक्तियों पर केवल 33 वाहनों की उपलब्धता है। इसका अर्थ है कि हमारे देश में वाहन स्वामित्व की यात्रा अभी बहुत लंबी है। हम हर भारतीय परिवार को कार स्वामित्व का अनुभव देने के अपने मिशन पर निरंतर काम करते रहेंगे।"

वर्तमान में कंपनी 19 मॉडल्स के 170 से अधिक वेरिएंट्स पेश कर रही है, जो छोटे हैचबैक से लेकर प्रीमियम एसयूवी तक के पूरे सेगमेंट को कवर करते हैं। आने वाले वर्षों में मारुति सुजुकी अपने पोर्टफोलियो को और विस्तृत करने की योजना बना रही है, ताकि "हर भारतीय के घर तक कार पहुंचाने" के अपने लक्ष्य को और मजबूती दी जा सके। चार दशक पहले मारुति 800 से शुरू हुई यह यात्रा अब तीन करोड़ ग्राहकों के विश्वास की कहानी बन चुकी है — एक ऐसी कहानी, जिसने भारत की सड़कों पर "मेड इन इंडिया" का सपना सच कर दिखाया।

बिलासपुर में भीषण ट्रेन हादसा, मलबे में जिंदा मिला मासूम बच्चा, माता-पिता की तलाश जारी, रेल सेवा ठप

(जीएनएस)। बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में मंगलवार शाम एक दर्दनाक हादसे ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया। गेवरा रोड से बिलासपुर की ओर जा रही मेमू पैसेंजर ट्रेन खड़ी मालगाड़ी से टकरा गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतर गए और चारों ओर चीख-पुकार मच गई। हादसे में अब तक 11 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि 20 से अधिक यात्री घायल बताए जा रहे हैं। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने हादसे की प्राथमिक वजह "सिग्नल ओवरशूट" बताई है, यानी मेमू ट्रेन ने निर्धारित सिग्नल पार कर लिया था और खड़ी मालगाड़ी से टकरा गई।

मलबे के बीच जब बचावकर्मी राहत कार्य में जुटे थे, तभी एक हृदयविदारक दृश्य सामने आया। रेल के मलबे में एक मासूम बच्चा घायल हालत में जिंदा मिला। बच्चे को तुरंत रेलवे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है। हालांकि अब तक इस बच्चे के माता-पिता या परिजनों का कोई पता नहीं चल पाया है। स्थानीय प्रशासन ने अपील की है कि यदि किसी को बच्चे के परिवार के बारे में कोई जानकारी हो तो वह तुरंत बिलासपुर रेल कंट्रोल रूम या अस्पताल प्रशासन से संपर्क करे। घटना के बाद अफरा-तफरी और भयावहता का माहौल था। ट्रेन के डिब्बे मुड़कर एक-दूसरे पर चढ़ गए थे। यात्रियों के चिल्लाने और सहायता मांगने की आवाजें दूर-दूर तक

सुनाई दे रही थीं। एनडीआरएफ, रेलवे पुलिस, स्थानीय पुलिस और मेडिकल टीमों ने मिलकर बचाव अभियान शुरू किया। रातभर ऑपरेशन चला और दर्जनों लोगों को मलबे से बाहर निकाला गया। सभी घायलों को बिलासपुर के विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। रेलवे प्रशासन ने प्राथमिक राहत के तौर पर घायलों को 50 हजार रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की है।

वरिष्ठ रेलवे अधिकारी, जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग की टीमें मौके पर मौजूद हैं। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी ने बताया कि टक्कर के कारण ओवरहेड वायर और सिग्नलिंग सिस्टम को भारी नुकसान हुआ है। हादसे के बाद बिलासपुर-कटनी रेलखंड पर सभी रेल सेवाएं अस्थायी रूप से रोक दी गई हैं। मरम्मत कार्य शुरू कर दिया गया है, लेकिन रूट बहाल होने में अभी कई घंटे लग सकते हैं। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि यह एक बेहद दुखद घटना है। उन्होंने जिला प्रशासन को तत्काल राहत एवं सहायता के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को 10 लाख रुपये, गंभीर रूप से घायलों को 5 लाख रुपये, और मामूली रूप से घायल यात्रियों को 1 लाख रुपये के मुआवजे की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि हादसे की पूरी जांच कराई जाएगी और दोषी पाए जाने वाले कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

हादसे की वजह समझने के लिए रेलवे की एक उच्च स्तरीय समिति बनाई गई है। प्रारंभिक जांच में स्पष्ट हुआ है कि मेमू ट्रेन ने "डेंजर सिग्नल" पार किया, जिसके कारण वह खड़ी मालगाड़ी के पिछले हिस्से से टकरा गई। टक्कर के झटके से पीछे के तीन डिब्बे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए और यात्री फंस गए। हादसे से ओवरहेड तार और पटरियां भी क्षतिग्रस्त हो गईं, जिससे विद्युत आपूर्ति बाधित हो गई।

रेलवे ने प्रभावित ट्रेनों की जानकारी भी जारी की है। इनमें ट्रेन नंबर 68746 रायपुर-गेवरा रोड मेमू, 12101 एलटीटी-शालीमार एक्सप्रेस, 12809 सीएसएमटी-हावड़ा मेल, 12070 गोंदिया-रायगढ़ जन शताब्दी एक्सप्रेस, 20826 नागपुर-बिलासपुर एक्सप्रेस, 18029 एलटीटी-शालीमार एक्सप्रेस और 12129 पुणे-हावड़ा एक्सप्रेस शामिल हैं। इन सभी ट्रेनों का रूट अस्थायी रूप से प्रभावित हुआ है। रेलवे ने राहत और सूचना के लिए हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं— बिलासपुर के लिए 7777857335 और 7869953330, चांपा के लिए 8085956528, रायगढ़ 9752485600, पेंड्रा रोड 8294730162, कोरबा 7869953330, उसलापुर 7777857338 और दुर्घटनास्थल से संपर्क हेतु 9752485499 व 8602007202।

स्थानीय लोगों ने कहा कि हादसे के कुछ ही मिनटों में पूरा क्षेत्र सायरन और चीखों से गूंज उठा। कई परिवारों का सबकुछ खत्म हो गया, वहीं एक मासूम की ज़िंदगी किसी चमत्कार से बच गई। अस्पताल में डॉक्टरों की टीम उस बच्चे का इलाज कर रही है, पर उसकी मासूम आंखें अब भी अपने माता-पिता को ढूंढ रही हैं। यह हादसा न सिर्फ रेलवे सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाता है, बल्कि यह भी याद दिलाता है कि एक लापरवाही की कीमत कई जिंदगियों से चुकानी पड़ सकती है।

महाराष्ट्र में डॉक्टर सुसाइड केस में बड़ी कार्रवाई, आरोपी पुलिसकर्मी बर्खास्त

(जीएनएस)। पुणे। महाराष्ट्र के सतारा जिले में एक महिला डॉक्टर की आत्महत्या मामले में पुलिस विभाग ने सख्त कार्रवाई करते हुए आरोपी पुलिस उपनिरीक्षक गोपाल बदाने को सेवा से बर्खास्त कर दिया है। यह कदम उस डॉक्टर की मौत के बाद उठाया गया है, जिसने अपनी हथेली पर सुसाइड नोट लिखकर पुलिसकर्मी पर कई बार दुष्कर्म करने और एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर द्वारा मानसिक प्रताड़ना देने का गंभीर आरोप लगाया था।

सतारा जिले के फलटण तालुका में 28 वर्षीय महिला चिकित्सक 23 अक्टूबर को एक होटल के कमरे में मृत पाई गई थी। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि उसने आत्महत्या करने से पहले अपनी हथेली पर लिखा था कि पुलिस उपनिरीक्षक गोपाल बदाने ने उसका यौन शोषण किया और सॉफ्टवेयर इंजीनियर प्रशांत बनकर ने उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। यह मामला सामने आने के बाद पूरे राज्य में आक्रोश फैल गया और पुलिस विभाग पर कार्रवाई के लिए दबाव बढ़ा।

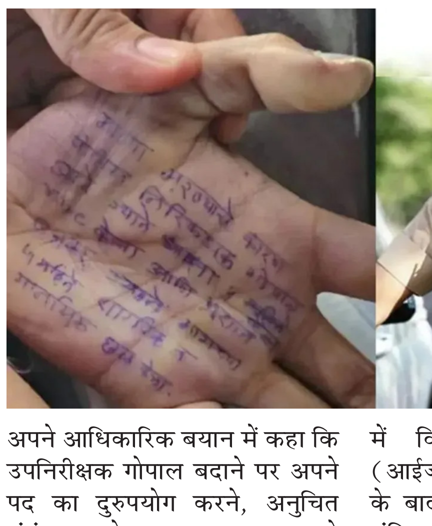

सतारा पुलिस ने बुधवार को जारी अपने आधिकारिक बयान में कहा कि उपनिरीक्षक गोपाल बदाने पर अपने पद का दुरुपयोग करने, अनुचित संबंध बनाने, अभद्र आचरण करने और गैर जिम्मेदाराना रवैया अपनाने के आरोप साबित हुए हैं। बयान में कहा गया है कि बदाने का व्यवहार एक पुलिस अधिकारी के कर्तव्य और मर्यादा के विपरीत था, जिससे न केवल पुलिस विभाग की साख को नुकसान पहुंचा बल्कि जनता के भरोसे को भी ठेस लगी। पुलिस ने इस पूरे घटनाक्रम को "बेहद निंदनीय और शर्मनाक" बताया है।

सतारा के पुलिस अधीक्षक तुषार दोशी ने जानकारी दी कि इस मामले में विशेष पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) सुनील फुलारी के निर्देशों के बाद गोपाल बदाने को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 311(2)(बी) के तहत बर्खास्त किया गया है। यह अनुच्छेद सरकार को उस स्थिति में किसी कर्मचारी को बर्खास्त करने का अधिकार देता है जब उसका आचरण पद की गरिमा के विपरीत पाया जाए और विभागीय जांच की आवश्यकता न रहे।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, बदाने के खिलाफ आपराधिक मामला पहले से दर्ज है और उस पर बलात्कार, धमकी और शोषण के आरोप लगाए गए हैं। फिलहाल मामला अदालत में लंबित है, लेकिन पुलिस प्रशासन ने आंतरिक जांच के आधार पर उसे सेवा से हटाने का निर्णय लिया।

इस पूरे प्रकरण के बाद महिला संगठनों और डॉक्टर समुदाय ने सरकार से यह मांग की है कि ऐसे मामलों में पुलिस कर्मियों पर तत्काल निलंबन के साथ-साथ विभागीय कार्रवाई भी की जाए ताकि भविष्य में कोई अधिकारी अपनी शक्तियों का दुरुपयोग न कर सके।

उधर, मृतक चिकित्सक के परिवार ने कहा है कि उन्हें न्याय चाहिए और आरोपियों को सख्त सजा मिलनी चाहिए। परिवार का कहना है कि डॉक्टर पेशे में समर्पित थी और उसने ऐसे किसी मानसिक दबाव की कभी कल्पना भी नहीं की थी। इस घटना ने पूरे राज्य में पुलिस तंत्र और महिलाओं की सुरक्षा पर फिर से सवाल खड़े कर दिए हैं।

सतारा पुलिस का कहना है कि मामले की जांच अभी भी जारी है और सॉफ्टवेयर इंजीनियर प्रशांत बनकर की भूमिका की भी गहन पड़ताल की जा रही है। अधिकारियों ने भरोसा दिलाया है कि किसी भी आरोपी को बख्शा नहीं जाएगा और न्याय सुनिश्चित किया जाएगा।